सांध्य दैनिक

श्रीकंचनपथ

RNI. Reg. No. CHHHIN/2009/30534
डाक पंजीयन क्रं.-छ.ग./ दुर्ग /94/2023-25

लीपा पोती नहीं सिर्फ सच

वर्ष- 15 अंक - 143 | www.shreekanchanpath.com | संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत- स्व. श्रीमती रजनी अग्रवाल | भिलाई, बुधवार 6 मार्च 2024 | पृष्ठ 8- मूल्य 1/-

खास-खबर

खतरे में 15 सांसदों का टिकट! भाजपा 32 पर तैयार, समझौते में नपेंगे कई नेता

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में एनडीए के बीच सीट बंटवारे को लेकर बात आगे बढ़ने लगी है। अमित शाह ने मंगलवार को एकनाथ शिंदे, देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार के साथ सीट बंटवारे पर बात की। इस मीटिंग में अमित शाह ने जोर दिया कि भाजपा कम से कम 32 सीटों पर कैंडिडेट उतारेगी। इसके अलावा एकनाथ शिंदे की शिवसेना को 10 सीटों का ऑफर दिया है, जबकि वह चाहते हैं कि उनके खाते में 13 सीटें आएं, जहां उनके सांसद है। ऐसे में चर्चा है कि महाराष्ट्र के कुल 15 सांसदों का भविष्य पर दांव पर लगा है। ये सांसद मुंबई से लेकर अमरावती जैसी सीटों के हैं।

इसकी वजह यह है कि शिवसेना कोटे की कुछ सीटें भाजपा के खाते में जा सकती हैं। वहीं भाजपा की कुछ सीटें अजित पवार और शिंदे गुट को मिल सकती है। ऐसे में इन सांसदों का भविष्य खतरे में होगा। सूत्रों का कहना है कि ज्यादातर शिंदे गुट के सांसदों के भविष्य पर तलवार लटक रही है। अब तक एकनाथ शिंदे गुट की मांग 22 सीटों पर अटकी थी। अब उन्होंने खुद ही 13 की मांग कर ली है, लेकिन भाजपा 10 पर ही राजी है। इसके अलावा अजित पवार 8 सीटों पर दावा ठोक रहे हैं और उन्हें 4 सीट देने पर ही सहमति बन रही है।

दरअसल भाजपा ने 2019 के आम चुनाव में 25 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 23 जीती थी। वहीं शिवसेना ने 23 सीटों पर उतरकर 18 हासिल की थीं। लेकिन भाजपा ने पिछले 5 सालों में अपनी बारगेनिंग पवार बढ़ा ली है। शिवसेना अब दो हिस्सों में बंट चुकी है। अजित पवार वाली एनसीपी भी पहले वाली संयुक्त पार्टी जैसी ताकत नहीं रखती। ऐसे में भाजपा चाहती है कि वह सीनियर पार्टनर के तौर पर ज्यादा सीटें लड़े। भाजपा को लगता है कि उसके कैंडिडेट के पक्ष में ज्यादा वोट मिलेंगे। यही वजह है कि अमित शाह ने इस बात पर जोर दिया कि भाजपा को ज्यादा सीटें मिलेंगी तो पूरे गठबंधन को फायदा होगा।

बस और कार की आमने-सामने हुई टक्कर, दुर्घटना में पांच लोगों की मौत

हरियाणा (एजेंसी)। रेवाड़ी-महेंद्रगढ़ मार्ग पर गांव सीहा के नजदीक भीषण सड़क हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई। हरियाणा रोडवेज की बस और बलेनो कार की सीधी टक्कर हो गई। जिसमें गांव चांगरोड के पांच लोगों की मौत हुई है। स्थानीय लोगों ने पुलिस को घटना की जानकारी दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल में भिजवा दिया है।

मिली जानकारी के मुताबिक गांव चांगरोड के लोग विवाह समारोह में शामिल होने के बाद वापस अपने घर लौट रहे थे। जानकारी के अनुसार हादसा सुबह के समय में हुआ है। टक्कर इतनी जबरदस्त था कि पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई है। वहीं, जानकारी के अनुसार हादसे में कई लोग घायल भी हुए हैं।

रायपुर में अपना और भाजपा दोनों का सम्मान बचाएंगे बृजमोहन

■ कद्दावर नेता को मैदान में उतारकर भाजपा ने कांग्रेस को कर दिया चारों खाने चित्त

श्रीकंचनपथ न्यूज डेस्क

रायपुर। भाजपा के वर्चस्व वाली रायपुर लोकसभा सीट पर कांग्रेस का प्रत्याशी आना अभी बाकी है, लेकिन इससे पहले ही कांग्रेस चारों खाने चित्त हो गई है। दरअसल, भाजपा ने इस सीट पर बृजमोहन अग्रवाल जैसे कद्दावर नेता को उतारकर आधी बाजी पहले ही जीत ली है। बची हुई आधी बाजी को जीतना बृजमोहन अग्रवाल जैसे सुलझे हुए और बेहद परिवक्व राजनेता के लिए मुश्किल नहीं है। 1996 से लेकर अब तक रायपुर सीट भाजपा का गढ़ है। इसलिए यह कहना कठिन नहीं होगा कि बतौर लोकसभा प्रत्याशी बृजमोहन अपने और भाजपा दोनों के सम्मान पर कोई आंच आने नहीं देंगे। फिलहाल मातृशोक से गुजर रहे बिरजू भैय्या को महज 6 माह के भीतर एक बार फिर चुनाव मैदान में उतारा गया है। 2019 के लोकसभा चुनाव में जब प्रदेश में भाजपा की सरकार थी, बृजमोहन ने ही रायपुर संसदीय सीट की कमान संभाली थी। तब इस लोकसभा क्षेत्र की 9 विधानसभा में से 6 पर कांग्रेस ने कब्जा जमाया था। बावजूद इसके बृजमोहन ने भाजपा की जीत तय करने में अहम् भूमिका निभाई थी।

6 महीने पहले प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी तो बृजमोहन अग्रवाल को स्कूल व उच्च शिक्षा, धर्मस्व व पर्यटन और संसदीय कार्यमंत्री जैसे दायित्व सौंपे गए। लेकिन उनकी नेतृत्व क्षमता और अपराजेय छवि के चलते पार्टी ने उन्हें लोकसभा का प्रत्याशी बनाया। इसमें कोई दो राय नहीं है कि चुनाव जीतने के बाद बृजमोहन राज्य की राजनीति से कट जाएंगे। लेकिन यह भी हकीकत है कि दिल्ली में छत्तीसगढ़ को एक मजबूत नेता मिलेगा। वैसे भी प्रदेश की राजनीति में बृजमोहन का कद काफी बड़ा है। कहा जा रहा था कि राज्य में सरकार बनने के बाद बृजमोहन के साथ न्याय नहीं हो पाया और उन्हें अनुभव के हिसाब से अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण विभाग सौंपे गए। हालांकि बृजमोहन ने कभी ऐसी बातों को तवज्जो नहीं दी। यही उनकी खासियत भी है। वे कमजोर समझे जाने वाले विभागों को भी अचानक महत्वपूर्ण बना देते हैं। 2005 में जब उन्हें संस्कृति और पर्यटन विभाग सौंपा गया था, तब तक इन विभागों को मृतप्राय माना जाता था, लेकिन बृजमोहन ने अचानक ही इन विभागों को पुनर्जीवित कर महत्वपूर्ण बना दिया था।

ऐसे रहे पिछले दो चुनाव के नतीजे

2014 के चुनाव में भाजपा ने जहां रमेश बैस को रायपुर संसदीय क्षेत्र से अपना उम्मीदवार बनाया था तो वहीं कांग्रेस की तरफसे सत्यनारायण शर्मा ने चुनाव लड़ा। चुनाव में बैस ने करीब 6,33,836 मत हासिल किए। वहीं 4,71,803 वोट हासिल कर कांग्रेस प्रत्याशी सत्यनारायण शर्मा दूसरे स्थान पर रहे। वहीं 2019 लोकसभा चुनाव की बात करें तो इस बार भी भाजपा का वर्चस्व देखने को मिला। भारतीय जनता पार्टी के सामने कांग्रेस के उम्मीदवार ने अपनी प्रबल दावेदारी पेश की। हालांकि भाजपा ने 2019 में रमेश बैस को टिकट न देकर सुनील सोनी को उम्मीदवार बनाया, वहीं कांग्रेस ने भी सत्यनारायण शर्मा की जगह प्रमोद दुबे को अपना उम्मीदवार बनाया। चुनाव परिणाम में भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी को 8,37,902 वोट प्राप्त हुए, वहीं दूसर स्थान पर रहे कांग्रेस के प्रत्याशी प्रमोद दुबे को 4,89,664 वोट प्राप्त हुए।

ऐसा है बृजमोहन का राजनीतिक सफरनामा

भाजपा के वरिष्ठ नेता बृजमोहन अग्रवाल साल 1990 को महज 31 साल की उम्र में पहली बार विधायक बने थे। छात्र जीवन से ही इन्होंने राजनीति की शुरुआत कर दी थी। 1984 में वे भारतीय जनता पार्टी के सदस्य बने। 1988 से 1990 तक वे भाजयुमो के युवा मंत्री रहे। 1990 में वे पहली बार मध्यप्रदेश विधानसभा में विधायक बने। इसके बाद से 1993, 1998, 2003, 2008, 2013, 2018 और 2023 में वे लगातार विधायक निर्वाचित होते आ रहे हैं। छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। इन्हें छत्तीसगढ़ में राजनीति का चाणक्य भी कहा जाता हैं। 2005 में उन्हें राजस्व, संस्कृति एवं पर्यटन, कानून और पुनर्वास का प्रभार सौंपा गया। इसी तरह 2006 में वन, खेल और युवा मामलों का प्रभार दिया गया। 2008 में स्कूल शिक्षा, लोक निर्माण, संसदीय मामले, पर्यटन और बंदोबस्त ट्रस्ट संस्कृति विभाग संभाला। 2013 में कृषि और जैव प्रौद्योगिकी, पशुपालन, मछलीपालन, जल संसाधन, सिंचाई, आयाकट, धार्मिक और बंदोबस्त विभागों का दायित्व मिला। वहीं, 2023 में स्कूल व उच्च शिक्षा, धर्मस्व और पर्यटन, संसदीय कार्यमंत्री का दायित्व निभा रहे हैं।

7 बार सांसद रहे रमेश बैस

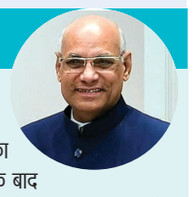

रायपुर लोकसभा सीट की बात करें तो यहां पर कई दशकों से भारतीय जनता पार्टी का वर्चस्व रहा है। इसमें भी यहां पर रमेश बैस खुद 7 बार सांसद रह चुके हैं। रमेश बैस 1989 में रायपुर सीट से पहली बार सांसद बने। इसके बाद 1991 में हुए चुनाव में कांग्रेस के विद्याचरण शुक्ला को रायपुर सीट से सांसद बनने का मौका मिला। दोबारा जब 1996 में लोकसभा चुनाव हुए तो रमेश बैस ने एक बार फिर जीत हासिल की। इस चुनाव के बाद से रमेश बैस ने कभी पीछ मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने 1996 के बाद 1998, 1999, 2004, 2009 और 2014 में लगातार रायपुर सीट पर जीत हासिल की। हालांकि 2019 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने रायपुर सीट पर सुनील सोनी को उम्मीदवार बना दिया। भाजपा को जीत दिलाने में सुनील सोनी भी पीछे नहीं रहे। हालांकि उनकी जीत के पीछे बृजमोहन अग्रवाल की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस बार फिर प्रत्याशी बदलते हुए भाजपा ने सुनील सोनी के स्थान पर बृजमोहन अग्रवाल को मैदान में उतारा है।

9 में से 8 सीटें भाजपा के पास

रायपुर संसदीय सीट को वीआईपी सीट माना जाता है, क्योंकि प्रदेश की सरकार यहीं बैठती है। प्रदेश के सारे निर्णय रायपुर से ही होते हैं। इस लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले 9 विधानसभा क्षेत्रों में से एकमात्र आरंग सीट अनुसूचित जाति वर्ग के लिए रिजर्व है। भाजपा के लिए अच्छी बात यह है कि इन 9 विधानसभा क्षेत्रों में से सिर्फ 1 भाटापारा सीट पर ही कांग्रेस का कब्जा है। यहां से कांग्रेस के इंद्रकुमार साव ने जीत हासिल की थी। जबकि बाकी की 8 सीटों में भाजपा के ही विधायक हैं। इनमें बलौदा बाजार से टंकराम वर्मा, धरसींवा से अनुज शर्मा, रायपुर (ग्रामीण) मोतीलाल साहू, रायपुर शहर (पश्चिम) से राजेश मूणत, रायपुर शहर (उत्तर) पुरंदर मिश्रा, रायपुर शहर (दक्षिण) बृजमोहन अग्रवाल, आरंग गुरू खुशवंत साहब, और अभनपुर से इंद्रकुमार साहू शामिल हैं। रायपुर लोकसभा क्षेत्र में करीब 25 लाख की आबादी रहती है, जिनमें साहू और कुर्मी समाज का वर्चस्व है। रायपुर में 30 फीसदी आबादी साहू समाज की तो 20 फीसदी आबादी कुर्मी समाज की है।

डहरिया को जांजगीर से टिकट!

■ भाजपा ने काटा है अपने सांसद का टिकट

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ लोकसभा के लिए बीजेपी ने अपने प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया है। बीजेपी ने जारी की पहली सूची में कई मौजूदा सांसदों के टिकट काटकर दूसरे नेताओं को मौका दिया है। वही कांग्रेस की ओर से अभी प्रत्याशियों का ऐलान नहीं किया गया है। माना जा रहा है कि एक दो दिन में कांग्रेस अपने उम्मीदवारों का ऐलान कर देगी। उम्मीदवारों के ऐलान से पहले प्रदेश की सबसे हॉट सीट जांजगीर लोकसभा को लेकर चर्चा होने लगी है। इसी सीट से बीजेपी ने मौजूदा सांसद गुहाराम अजगले का टिकट काटकर सरपंच रह चुकी कमलेश जांगड़े को मौका दिया है। ऐसे में जांजगीर सीट पर कांग्रेस से कौन उम्मीदवार होगा?

जांजगीर लोकसभा सीट की बात करे तो यह सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। जांजगीर लोकसभा में 8 विधानसभा सीटे आती है। जांजगीर लोकसभा की विधानसभा सीटों के

इतिहास की बात करे तो इस सीट पर 2023 के विधानसभा चुनाव में सभी 8 सीटों पर कांग्रेस ने जीत दर्ज की थी, और इसका श्रय कांग्रेस नेता और नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत को जाता है। चरण दास महंत का इन क्षेत्रों में अच्छा प्रभाव माना जाता है। लेकिन 2019 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी ने जीत दर्ज की थी। बीजेपी इस बार भी जांजगीर लोकसभा बरकरार रखना चाहती है। बीते दिनों गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा चुनाव के लिए इसी सीट से चुनावी शंखनाद किया था।

जांजगीर क्षेत्र में नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत का है अच्छा प्रभाव माना जाता है। चरणदास महंत इस सीट से सांसद भी रहे है। हालांकि उन्होंने लोकसभा चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया है। ऐसे में सवाल उठने लगा है कि जांजगीर से अगर चरणदास महंत नहीं तो फिर कांग्रेस किसे उम्मीदवार बनाएगी।

कांग्रेस सूत्रों की माने तो कांग्रेस जांजगीर लोकसभा से पूर्व मंत्री शिवकुमार डहरिया को टिकट दे सकती है। सूत्रों का कहना है कि डहरिया का लोकसभा लड़ना तय माना जा रहा है। डहरिया 2018 के विधानसभा चुनाव में विधायक चुने गए थे और बघेल सरकार में नगरीय प्रशासन मंत्री रहे। लेकिन 2024 के विधानसभा चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके अलावा राइस किंग खूंटे, रमेश पैगवार, साक्षी युगल बंजारे, रवि शेखर भारद्वाज और शिवकुमार डहरिया की पत्नी शकुन डहरिया का नाम भी दावेदारों की सूची में शामिल है।

पुलिसकर्मी की पत्नी की गला काटकर हत्या

रायपुर। विधानसभा थाना क्षेत्र के आमासिवनी इलाके में उस वक्त सनसनी फैल गई जब एक विवाहिता की गला काटकर बेरहमी से हत्या की खबर लोगों को मिली। मृतका पुलिसकर्मी की पत्नी है। पूरी घटना आमासिवनी पुलिस कॉलोनी की बताई जा रही हैं। शुरुआती जानकारी के मुताबिक यहाँ रहने वाले शिशुपाल सिंह की पत्नी की हत्या की गई है। शिशुपाल सिंह फिलहाल सुकमा पुलिस विभाग में डॉग हैंडलर हैं। इस वारदात को अंजाम देने के बाद से हत्यारा फरार बताया जा रहा हैं। विधानसभा पुलिस की टीम घटनास्थल पर पहुँच चुकी हैं। मामले की जाँच की जा रही है।

7 को नहीं आएगा महतारी वंदन का पैसा, जल्द तय होगी नई तारीख

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। 7 मार्च को अपने खातों में 1000 रुपए ट्रांसफर का इंतज़ार कर रही प्रदेश की महतारियों के लिए निराशा भरी खबर है। महिला बाल विकास विभाग की मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने बताया हैं कि कल यानी 7 मार्च को महतारी वंदन योजना की राशि खातों में ट्रांसफर नहीं की जाएगी। बताया गया हैं कि इसके लिए नई तारीख फिर से तय की जाएगी।

बता दें कि मोदी की गारंटी के तहत प्रदेश की साय सरकार ने महतारी वंदन योजना को प्रदेश भर में लागू कर दिया हैं। पिछले महीने की 20 फरवरी को आवेदन की अंतिम तारीख थी। प्रदेश की करीब 70 लाख महिलाओं को योजना के लिए पात्र पाया गया हैं जिन्हें 1000 रुपए प्रतिमाह उनके डीबीटी के माध्यम से बैंक खातों में ट्रांसफर किया जाएगा।

पूर्व में सरकार की योजना अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 दिसंबर को महिलाओं के खातों में पैसे ट्रांसफर करने की थी। बाद में यह बताया गया कि 8 तारीख के एक दिन पहले यानी 7 मार्च को राशि भेजी जाएगी। हालाँकि अब फिर एक बार बदलाव करते हुए बताया गया हैं कि 7 मार्च को भी खातों में पैसे नहीं आएंगे। नई तारीख ऐलान जल्द ही किया जाएगा। मंत्री के इस ऐलान के बाद महतारियों में निराशा झलक रही हैं। सूत्रों की मानें तो महिला एवं बाल विकास विभाग पीएम का कार्यक्रम तय होने के तत्काल बाद ही योजना की राशि महिलाओं को भेजेगी। ऐसा इसलिए भी क्योंकि इससे जुड़ी सभी तरह की तैयारी पूरी की जा चुकी हैं। खासकर डीबीटी एक्टिवेशन और आधार साइडिंग का काम भी लगभग पूरा हो चुका हैं।

गनीमत है स्वास्थ्य विभाग में नहीं होते ऐसे तबादले

श्रीकंचनपथ

जिन अफसरों की धड़ाधड़ कार्रवाई के चलते पिछली सरकार की चूलें हिल गईं, अब उन्हीं अफसरों को बदला जा रहा है. एसीबी-ईओडब्लू की पुरानी टीम को पूरी तरह बदल दिया गया है। इन दो विभागों के 32 अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति को खत्म कर उन्हें उनके मूल विभाग को लौटा दिया गया है। गनीमत है स्वास्थ्य और शिक्षा विभाग में इस तरह के तबादले नहीं होते। वरना मेडिसिन वाले सर्जरी में, ईएनटी वाले आर्थो में और गायनिक वाले कार्डियो में पदस्थ हो जाते। स्कूल कालेजों में साइंस वाले आर्ट्स, आर्ट्स वाले गणित और गणित वाले अकाउंट्स पढ़ा रहे होते। विश्वास और अविश्वास का यह खेल किसी भी विभाग की विशेषज्ञता को पलीता लगा सकता है। कहावत है 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'.. पर यहां किसे पड़ी है। इन विभागों को सुजानों की नहीं बल्कि आस्थावानों की जरूरत है। विधायिका की इन्हीं हरकतों के वजह से कार्यपालिका की कार्यप्रणाली बिगड़ती है। आईएएस और आईपीएस अधिकारी भी आकाओं की मिजाजपुर्सी में लग जाते हैं। उनकी कार्यक्षमता के विकास और योग्यतानुसार नियुक्ति के रास्ते बंद हो जाते हैं। लिहाजा अधिकारी भी अपने काम-काज की बजाय नेताओं की मर्जी को तरजीह देने के लिए विवश हो जाते हैं। दरअसल, सरकारी अमले के दुरुपयोग के ये संस्कार भी हमें ब्रिटिश हुकूमत से विरासत में मिले हैं। ब्रिटिशकालीन भारत में अंग्रेज जब चाहे नियमों को अपने हक में तोड़-मरोड़ लेते थे। यह परिपाटी आज भी जारी है। इसलिए पुलिस हो या प्रशासनिक अधिकारी, किसी के खिलाफ कार्रवाई करने से पहले कानून की किताबें नहीं बल्कि आरोपी के कनेक्शन पर गौर करते हैं। इसलिए कुछ वारंटी जीवन भर वारंटी ही रहते हैं। उनकी कभी गिरफ्तारी नहीं होती। पुलिस उनके साथ बैठकर चाय-नाश्ता करती है पर अदालत में यही बताती है कि वारंटी घर पर नहीं मिला। अधिकारियों को भी पता है कि अदालतें सिर्फ उन्हें खरी-खोटी सुना सकती हैं, ज्यादा कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं। अदालतों के कई आदेश, सरकारी दफ्तरों की फाइलों में पड़े धूल फांकते रहते हैं। इसका सीधा असर कानून व्यवस्था पर पड़ता है। अभी यह प्रशासनिक सर्जरी या उठक-पटक चल ही रही है कि एक अवकाशप्राप्त अधिकारी के मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। आरोप हैं कि पिछले कुछ सालों में उसने अकूत संपत्ति इकट्ठा कर ली। वैसे जिस गांव में उनकी सबसे ज्यादा संपत्ति और हवेली है, उनके पिता वहां के मालगुजार थे। मछली पालन के तालाब, पोल्ट्री फार्म, इंग्लिश मीडियम स्कूल और अलग-अलग जिलों में उनके परिवार की संपत्ति मिली है। वे स्वयं सरकारी सेवा में उच्च पदस्थ रहे हैं। सरकार किसी की भी हो, उनके कामकाज में कभी कोई बाधा विघ्न नहीं आया। जाहिर है कि वे नौकरी करने के साथ-साथ अपने आकाओं को खुश रखने में सिद्धहस्त थे। गुलाम भारत के उद्यमी गूजरमल मोदी से लेकर स्वतंत्र भारत के अदाणी, अंबानी तक यही वह एक गुण है जो इन सबमें समान रूप से पाया जाता है।

संपादकीय

सार्थक आदेश

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों पर कातिलाना हमले के आरोपी संदेशखाली गांव के शाहजहां शेख को सीबीआई को तत्काल सौंपने संबंधी कलकत्ता हाईकोर्ट का आदेश ममता बनर्जी सरकार ही नहीं, उन तमाम सरकारों के लिए एक सबक है, जो अपने सियासी नफे-नुकसान के लिए इंसाफ की राह में रोड़े अटकाने की कोशिश करती हैं। गौरतलब है, शेख पर गरीबों की जमीन हड़पने, हफ्ता वसूली और महिलाओं के यौन उत्पीड़न जैसे दर्जनों गंभीर अपराध के आरोप हैं। मगर ईडी अधिकारियों पर हमले की वारदात के बाद 55 दिनों तक वह गिरफ्तारी से बचता रहा और अंतत: अदालत की फटकार के बाद ही पकड़ा जा सका। फिर सत्तारूढ़ तृणमूल ने उसे छह वर्षों के लिए पार्टी से निष्कासित करने में कोई देरी नहीं लगाई।

> मगर दुर्योग से देश की तमाम जिम्मेदार पार्टियां इसके वादे तो करती हैं, पर वास्तव में उनका आचरण इसके ठीक उलट होता है। गौर कीजिए, एडीआर के मुताबिक, आपराधिक मामलों वाले सांसदों की जो तादाद साल 2004 में 24 फीसदी थी, वह 2019 में 43 प्रतिशत तक पहुंच गई।

सवाल है कि इतनी किरकिरी के बाद भी पार्टी को उसके खिलाफ कार्रवाई करने में इतना वक्त क्यों लगा? 40 से अधिक आपराधिक मामलों का एक आरोपी वर्षों से आजाद घूमता रहा, पर राज्य सरकार खामोश रही? जाहिर है, इसी खामोश संरक्षण ने उसे ईडी अफसरों पर हमले का हौसला दिया। मगर क्या यह स्थिति सिर्फ पश्चिम बंगाल और शाहजहां शेख तक महदूद है? अभी कितने दिन हुए, जब एक रसूखदार सजायाफ्ता मुजरिम को बार-बार पैरोल देने के लिए पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने हरियाणा सरकार को फटकार लगाई थी? दरअसल, अपराध व राजनीति के नाभिनाल संबंध को विच्छिन्न किए बिना बेहतर समाज व लोकतंत्र संभव नहीं है। मगर दुर्योग से देश की तमाम जिम्मेदार पार्टियां इसके वादे तो करती हैं, पर वास्तव में उनका आचरण इसके ठीक उलट होता है। गौर कीजिए, एडीआर के मुताबिक, आपराधिक मामलों वाले सांसदों की जो तादाद साल 2004 में 24 फीसदी थी, वह 2019 में 43 प्रतिशत तक पहुंच गई। मौजूदा लोकसभा के तो 159 सदस्यों के खिलाफ हत्या, बलात्कार, अपहरण और यौन उत्पीड़न जैसे गंभीर आरोप हैं। राज्य विधानसभाओं की तस्वीरें भी इससे अलग नहीं हैं। ऐसे में, शाहजहां शेखों पर शिकंजा कसने का नैतिक बल कहां से मिलेगा? संदेशखाली मामले का सबसे चिंताजनक पहलू है, केंद्रीय और राज्य की जांच एजेंसियों का एक-दूसरे पर भरोसा खो देना और एक-दूसरे के विरुद्ध न्यायिक शरण में जाना। हमारे संविधान निर्माताओं ने बहुत बारीकी से केंद्रीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची के तहत शासन के विषयों का बंटवारा किया था, ताकि संघीय ढांचे और शासन-प्रशासन में किसी किस्म की उलझन न पैदा हो। मगर तब भी बाबा साहब आंबेडकर ने आगाह किया ही था कि संविधान चाहे कितना भी अच्छा बना लें, अगर उसे लागू करने वाले लोग अच्छे न हुए, तो यह निश्चित रूप से सार्थक साबित नहीं होगा। जिस तरह से राज्य-दर-राज्य केंद्रीय एजेंसियां और राज्य पुलिस आमने-सामने आ रही हैं और विपक्षी राज्य सरकारें सीबीआई के खिलाफ खड़ी हो रही हैं, उससे सात दशक पुरानी आशंकाएं ही घनीभूत होती हैं। यकीनन, इसके लिए किसी एक पार्टी या सरकार को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। शाहजहां शेख का मामला एक बड़ी नजीर है कि राजनीतिक दुर्भावना के तहत सरकारी संस्थाओं पर आरोप-प्रत्यारोप कैसे जाने-अनजाने सरकारों को कथित अपराधियों के पक्ष में कर दे रहा है। ऐसे में, न्यायपालिका के हस्तक्षेप से उम्मीद तो बंधती है, मगर विधायिका को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ेगी।

सिर्फ नकारात्मक एजेंडे पर?

आखिरकार विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन की पहली रैली हुई। पटना में हुई रैली में गठबंधन के कई बड़े चेहरे मौजूद रहे और वहां जुटे लोगों में जीवंतता भी नजर आई। उम्मीद की जा सकती है कि इस रैली की सफलता से विपक्षी दलों में उत्साह एक हद तक लौटेगा, जो हाल में लगातार सियासी झटकों से आहत रहे हैं। इसके बावजूद यह तथ्य अपनी जगह बना हुआ है कि यह गठबंधन उद्देश्य की एकता दिखाने और सत्ता पक्ष के खिलाफ संघर्ष के लिए संकल्पबद्ध होने का संदेश देने में बहुत देर कर चुका है। पटना रैली में दिए गए भाषणों पर भी गौर करें, तो साफ होता है कि विपक्षी नेता वहां भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन पर बरसने से आगे नहीं बढ़ सके। इससे यही जाहिर होता है कि इंडिया गठबंधन के पास भाजपा विरोधी स्वाभाविक मतदाताओं और एनडीए के दस साल के शासनकाल से असंतुष्ट वोटों को जुटाने के अलावा कोई और रणनीति नहीं है। अपना कोई सकारात्मक एजेंडा जनता के सामने रखने की जरूरत तक इन दलों ने महसूस नहीं की है।

इस बीच गठबंधन में शामिल पार्टियां अपना-अपना घोषणापत्र जरूर तैयार कर रही हैं, लेकिन जब एनडीए का मुकाबला वे इंडिया एलायंस के तौर पर करने जा रही हैं, तो उन अलग घोषणापत्रों की क्या साख होगी? वायदों और प्रस्तावित कार्यक्रमों पर कोई न्यूनतम सहमति भी है या नहीं, आखिर यह जानने का मतदाताओं के पास क्या जरिया होगा? मसलन, मतदाता यह कैसे भरोसा करेंगे कि किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य लागू करने और सेना में अग्निपथ योजना खत्म करने के कांग्रेस के वादे पर गठबंधन में शामिल अन्य दल भी सहमत हैं या नहीं?

यह बेहिचक कहा जा सकता है कि साझा न्यूनतम कार्यक्रम के अभाव में इंडिया गठबंधन महज राज्य स्तर पर सीटों का एक तालमेल है- जिसका मकसद भाजपा विरोधी वोटों का बिखराव रोकना है। यह अपने-आप में एक अच्छी पहल है, लेकिन इसे 'कुछ नहीं से कुछ बेहतर' से ज्यादा की रणनीति नहीं माना जाएगा। क्या यह भाजपा की चुनावी मशीन का मुकाबला करने में समर्थ होगा?

सतर्कता की उचित सलाह

आशंका है कि अगले 3-4 वर्षों में चिप के अति उत्पादन के कारण चिप कारोबार में मुनाफा घट सकता है। ऐसे में वे उद्यम ही टिकाऊ होंगे, जो कम लागत में उन्नत चिप का उत्पादन करेंगे। क्रिस मिलर ने इसी संदर्भ में अपनी सलाह पेश की है।

भारत सरकार ने बीते हफ्ते एक लाख 26 हजार करोड़ रुपये निवेश की तीन चिप परियोजनाओं को मंजूरी दी। बताया गया है कि इनके लिए भारत सरकार 48,000 करोड़ रुपये की सब्सिडी देगी। इनमें भारत का पहला सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन प्लांट भी है, जो टाटा ग्रुप एक ताइवानी कंपनी के साथ मिलकर लगाएगा। इसके पहले पिछले साल केंद्र ने अमेरिकी कंपनी माइक्रॉन टेक्नोलॉजी के साथ मिलकर लगाए जाने वाले संयंत्र को मंजूरी दी थी, जिसमें कुल 2.75 बिलियन डॉलर का निवेश होगा। केंद्र सरकार ने सेमीकंडक्टर उद्योग के लिए 10 बिलियन डॉलर (76000 करोड़ रुपये) की विशाल सब्सिडी का प्रावधान कर रखा है। इसे भारत की महत्त्वाकांक्षी पहल बताया गया है। लेकिन इस बड़ी योजना को लेकर कुछ सवाल भी उठे हैं। मसलन, विशेषज्ञ और बहुचर्चित किताब चिप वॉर के लेखक क्रिस मिलर ने भारत सरकार को यह सुनिश्चित करने की सलाह दी है कि भारत में लग रहे चिप कारखाने मुनाफा कमा सकने की स्थिति में हों। साथ ही ये उद्यम चिप विकास में भी योगदान करें। गौरतलब है कि भारत में फैब्रिकेशन यानी चिप उत्पादन के कारखाने लगाए जा रहे हैं। विकास से मतलब चिप तकनीक को उन्नत करने से है, जिसके लिए बहुत बड़े निवेश और महारत की जरूरत पड़ती है। कारखानों के मुनाफे को लेकर प्रश्न इसलिए उठे हैं, क्योंकि कोरोना काल में सप्लाई श्रृंखला भंग होने से चिप की हुई किल्लत झेलने के बाद दुनिया भर में नए ट्रेंड चिप कारखानों के लिए बड़े पैमाने पर निवेश का है।

> **शीर्ष अदालत ने तो अपना काम कर दिया, अब बारी है संसद की कि वह कानून में जरूरी बदलाव करे और विधायिका सदस्यों को मिले विशेषाधिकारों को ही खत्म कर दे। सांसदों-विधायकों को यह विशेषाधिकार नहीं होना चाहिए कि वे सदन में झूठ बोल सकें, गलत तथ्य पेश करके किसी की छवि बिगाड़ सकें, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर सकें अथवा किसी प्रकार की दंड संहिता का उल्लंघन कर सकें।**

माननीयों को कितना विशेषाधिकार

एसएन ढींगरा, पूर्व न्यायाधीश

सोमवार को देश के उच्चतम न्यायालय की सात जजों की पीठ ने अपने सर्वसम्मत फैसले से साल 1998 के नरसिम्हा राव बनाम सीबीआई मामले में दिए गए निर्णय को पलट दिया। पांच जजों की पीठ ने वह फैसला 3-2 के बहुमत से दिया था। जब वह फैसला आया था, तब उसने देश के प्रबुद्ध वर्ग में एक गहरी निराशा भर दी थी। उस फैसले के अनुसार, विधायिका का कोई भी सदस्य अपना वोट बेच सकता था। इसे उसका विशेषाधिकार माना गया, जिसके लिए उस पर कोई मुकदमा भी नहीं चलाया जा सकता था। हां, उस पर मुकदमा तभी चल सकता था, जब वह पैसे लेकर पैसे देने वाले की इच्छा के अनुसार वोट न करे। जाहिर है, यह एक विचित्र तर्क था, जहां रिश्वत लेना तो माफ था, लेकिन रिश्वत लेकर बेईमानी करने को अक्षम्य अपराध माना गया था।

इस फैसले के बाद देश के संसदीय लोकतंत्र में रिश्वत का खेल बहुत बढ़ गया। आज स्थिति यह है कि किसी भी राज्य में चुनाव के बाद राजनीतिक पार्टियां अपने चुने गए सदस्यों को भेड़-बकरी की तरह किसी रिसॉर्ट या होटल में बंद कर देती हैं, ताकि कोई उनकी बोली न लगा पाए। पार्टियों को यह डर सताता है कि उनके सांसद या विधायक खरीद लिए जाएंगे, और बिकने के बाद वे अपना वोट दूसरी पार्टी के हक में डाल देंगे, और आप उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। यह अक्सर देखा गया कि हर चुनाव के बाद या जब कभी सरकार पर कोई संकट आया, तो विधायकों को किसी दूसरे प्रदेश के होटल या रिसॉर्ट में ले जाकर बंद कर दिया गया, यहां तक कि उनके मोबाइल भी रख लिए गए।

ऐसे में, सुप्रीम कोर्ट का ताजा फैसला हवा के ताजा झोंके की तरह है। अब तक संविधान के अनुच्छेद 105 (2) और 194 (2) के तहत सांसदों और विधायकों को सदन के अंदर कुछ कहने और करने का विशेषाधिकार मिला हुआ था। नतीजतन, कई बार माननीयों द्वारा भाषण के दौरान ऐसे-ऐसे आरोप लगाए जाते रहे, जो यदि सदन के बाहर बोले जाते, तो भाषण देने वाले सांसद या विधायक पर आपराधिक अवमानना या कानून के तहत अन्य अपराधों के लिए मुकदमा हो जाता। अब कम से कम यह साफ हो गया है कि रिश्वत लेकर वोट देना विधानमंडल के सदस्यों के विशेषाधिकार में नहीं आता, न ही रिश्वत लेकर सवाल पूछना या विशेष प्रकार का भाषण देना संसदीय विशेषाधिकार है। इस फैसले से यह आशा की जाती है कि भारतीय लोकतंत्र में अधिक स्वच्छता, शुचिता और जिम्मेदारी से काम होगा, और जनता के प्रतिनिधि देश की जनता को धोखा नहीं दे सकेंगे। यानी, जन-प्रतिनिधि जिस दल से चुनकर आएंगे, उसी पार्टी की

इच्छानुसार अपना वोट करेंगे।

शीर्ष अदालत ने तो अपना काम कर दिया, अब बारी है संसद की कि वह कानून में जरूरी बदलाव करे और विधायिका सदस्यों को मिले विशेषाधिकारों को ही खत्म कर दे। सांसदों-विधायकों को यह विशेषाधिकार नहीं होना चाहिए कि वे सदन में झूठ बोल सकें, गलत तथ्य पेश करके किसी की छवि बिगाड़ सकें, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर सकें अथवा किसी प्रकार की दंड संहिता का उल्लंघन कर सकें। ये विशेषाधिकार भारतीय संविधान में विदेशी नकल से लाए गए हैं। ब्रिटेन के 'हाउस ऑफ कॉमन्स' (संसद का निचला सदन) के विशेषाधिकारों की तर्ज पर ये भारतीय संविधान में शामिल किए गए। इनमें भारतीय संस्कृति की मूल भावना का उल्लंघन है। भारतीय संस्कृति में यह नहीं माना जाता कि राजा कानून से ऊपर है, जैसा कि इंग्लैंड के अंदर नियम है कि 'किंग कैन डु नो रॉन्ग', यानी राजा कोई गलती नहीं कर सकता। इसके उलट, भारत में राजा भी धर्म के अधीन होता है और न्याय के लिए उसको भी दंड दिया जा सकता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए अब हमारी संसद को भी संसदीय विशेषाधिकारों से जुड़े अनुच्छेदों को खत्म कर देना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सदन में सदस्य भाषण देते समय मर्यादाओं का ख्याल रखेंगे, और किसी भी व्यक्ति के खिलाफ गलतबयानी नहीं करेंगे या अपनी दुर्भावना जाहिर नहीं करेंगे।

आज ज्यादा से ज्यादा होता यह है कि असंसदीय टिप्पणियां और ऐसे भाषण रिकॉर्ड से निकाल दिए जाते हैं, लेकिन किसी भी बाहरी व्यक्ति के पास यह अधिकार नहीं है कि वह सांसद या विधायक पर मुकदमा चला सके। जिस प्रकार अन्य सामान्य व्यक्ति पर कानून लागू होता है, वैसे ही विधायिका के सदस्यों पर भी कानून लागू होने चाहिए। इससे उनके कार्य करने की क्षमता पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि विधायिका के सदस्यों का यह काम नहीं है कि वे सदन में झूठ बोलें, गलत तथ्य पेश करें, दुर्भावनापूर्ण भाषण दें या दूसरों की मर्यादा को तार-तार करें। उम्मीद है, अगली संसद इस फैसले के बाद बाकी सभी विशेषाधिकारों को भी समाप्त कर देगी।

इसी फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने 2006 के कुलदीप नैयर बनाम भारत संघ फैसले को भी स्पष्ट करते हुए कहा कि राज्यसभा चुनाव संविधान के अनुच्छेद 194 (2) के अंतर्गत आता है। कुलदीप नैयर केस में यह कहा गया था कि राज्यसभा के लिए वोट देना संसदीय कार्य नहीं है, और इसलिए उसमें संसदीय विशेषाधिकार लागू नहीं होते। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को स्पष्ट कर दिया कि उस फैसले का यह हिस्सा गलत है और राज्यसभा के लिए वोट देना भी संसदीय कार्य है, जिसे संसदीय विशेषाधिकारों में गिना जाएगा।

शीर्ष अदालत का यह फैसला विधायिका के लिए मील का एक पत्थर साबित हो सकता है। अब बहुत से दलों का यह डर कि उनके सदस्यों को खरीद लिया जाएगा और बिकने के बाद वे खरीदार के अनुसार वोट देंगे, समाप्त हो जाएगा, क्योंकि ऐसे सदस्यों के खिलाफ अब कानूनी कार्रवाई हो सकेगी। पार्टियों को यह जरूरत नहीं पड़ेगी कि वे अपने सदस्यों को किसी गेस्ट या रेस्ट हाउस में बंद करें। अगर कोई सदस्य रिश्वत लेकर वोट देता है, तो वह अपराधी माना जाएगा और उसके ऊपर मुकदमा चलेगा। अब कुछ नेताओं का यह कहना भी कि बेशक दूसरे दलों से रिश्वत ले ली जाए, लेकिन वोट मूल पार्टी के पक्ष में किया जाए, कानूनी अपराध माना जाएगा। वास्तव में, अब किसी भी रूप में रिश्वत लेना ही आपराधिक कृत्य बन जाएगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

महिलाओं को आर्थिक आजादी देगी महतारी वंदन योजना

छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण के लिए बड़ा कदम

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के एक दिन पहले महिलाओं के खाते में आएगी राशि

महिला सशक्तिकरण से महिलाओं में उस शक्ति का प्रवाह होता है, जिससे वो अपने को सकारात्मक भूमिका देने में अहम योगदान कर सकती है। जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों की वजह से आज भारत देश विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में है। विकसित भारत बनाने के साथ विकसित छत्तीसगढ़ बनाने के लिए यहां की माताओं और बहनों का बड़ा योगदान रहने वाला है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार राज्य की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए राज्य में महतारी वंदन योजना की शुरुआत की गई है। छत्तीसगढ़ में तीज-त्यौहारों और खुशी में महिलाओं को तोहफे, पैसे और नेग देने का रिवाज है। महतारी वंदन योजना के माध्यम से उसी परंपरा छत्तीसगढ़ शासन निभा रही है।

महतारी वंदन योजना के तहत राज्य में विवाहित महिलाओं को 1,000 रुपए प्रतिमाह (कुल 12,000 रुपए सालाना) वित्तीय सहायता दी जाएगी, जो प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जाएगी। इस योजना का उद्देश्य राज्य में महिलाओं के बीच लैंगिक भेदभाव, असमानता और जागरूकता के स्तर का बढ़ावा, महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन तथा उनके स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सुधार करना है। इसका लाभ उन विवाहित महिलाओं को मिलेगा जो 1 जनवरी, 2024 तक 21 वर्ष या उससे अधिक आयु के साथ छत्तीसगढ़ की मूल निवासी हैं। विधवा, तलाकशुदा और परित्यक्त महिलाएं भी योजना के लिये पात्र हैं। महिलाएं खुश है कि वो महतारी वंदन योजना से मिली राशि से अपने बच्चों और परिवार की छोटी-छोटी जरूरतें पूरी कर पाएगी।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि 2024-25 बजट में उनकी सरकार का फोकस गरीब, युवा, अन्नदाता किसान और नारी सशक्तिकरण पर केन्द्रित है। बजट में सभी वर्गों की चिन्ता की गई है। यह बजट सरकार का विजन डॉक्यूमेंट भी है, जो छत्तीसगढ़ के चौमुखी विकास की परिकल्पना को दर्शाता है। उन्होंने कहा है कि उनका प्रयास आने वाले पांच वर्षों में राज्य की जीडीपी को दोगुना करने का होगा। इसी लिए राज्य की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बजट में महतारी वंदन योजना के लिए 3,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

महतारी वंदन योजना के तहत आवेदन भरने के प्रथम चरण में लगभग 70 लाख महिला हितग्राहियों की अनंतिम सूची जारी की जा चुकी है एवं इनका प्रकाशन आंगनबाड़ी केंद्रों एवं ग्राम पंचायत स्तर पर किया जा चुका है।

-डॉ. दानेश्वरी संभाकर
सहायक संचालक

बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की जरूरत

जयंतीलाल भंडारी

हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा मंत्रिपरिषद की बैठक की अध्यक्षता करते हुए 'विकसित भारत: 2047' के लिए दृष्टि पत्र और अगले पांच वर्षों के लिए एक विस्तृत कार्ययोजना पर विचार-मंथन किया गया। 'विकसित भारत' के लिए यह 'रोडमैप' दो साल से अधिक की गहन तैयारी का परिणाम है। इस रोडमैप को तैयार करने में देश के विभिन्न मंत्रालयों, राज्य सरकारों, शिक्षाविदों, उद्योग संगठनों, नागरिक समाज, संस्थाओं, वैज्ञानिक संगठनों के साथ व्यापक परामर्श के लिए आयोजित विभिन्न स्तरों पर करीब 2,700 से अधिक बैठकों, कार्यशालाओं और सेमिनारों के साथ युवाओं से प्राप्त सुझावों की अहम भूमिका रही है। विकसित भारत के लिए इस रोडमैप के लक्ष्यों में आर्थिक विकास, सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी), जीवन को आसान बनाना, व्यापार करने में आसानी, बुनियादी ढांचा और सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

29 फरवरी को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक वित्त वर्ष 2023-24 की अक्टूबर से दिसंबर के तिमाही में देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 8.4 फीसदी की तेज दर से बढ़ा है। अब एनएसओ ने चालू वित्त वर्ष 2023-24 के लिए विकास दर का अनुमान बढ़ाकर 7.6 फीसदी कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि विगत 10 वर्षों में देश की अर्थव्यवस्था दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गई है। माना जा रहा था कि भारत 2026 में जापान को पीछे कर दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। पिछले दिनों भारतीय अर्थव्यवस्था पर जारी विस्तृत रिपोर्ट 'द इंडियन इकोनॉमी ए रिव्यू' में कहा गया है कि वर्ष 2027 साल में ही भारतीय अर्थव्यवस्था पांच ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी और भारत आर्थिक आकार के लिहाज से अमेरिका व चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। पिछले एक दशक में साहसिक आर्थिक निर्णयों ने देश की आर्थिक बुनियाद को मजबूत बना दिया है।

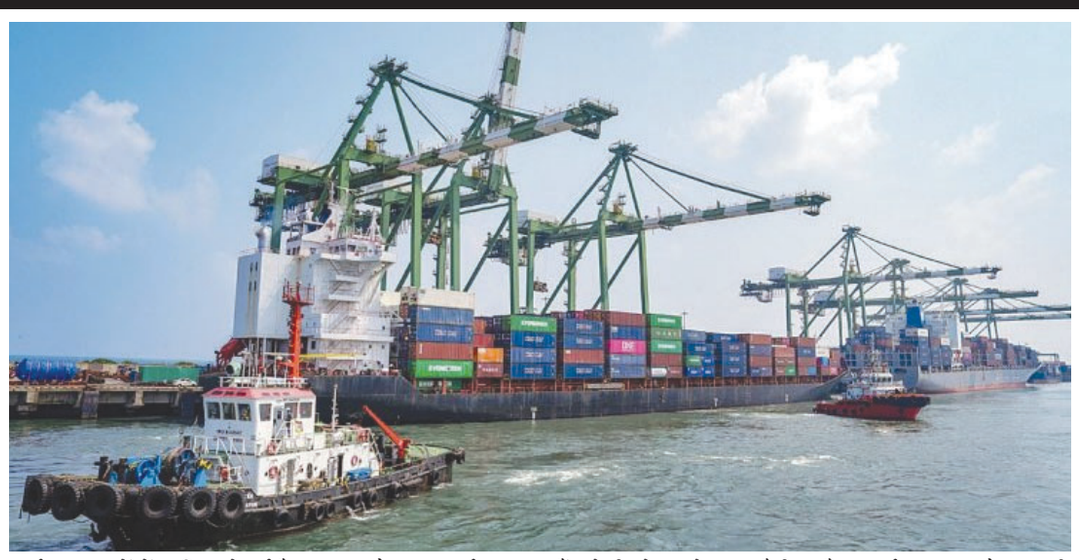

भारत के पास आज टिकाऊ विकास के अभूतपूर्व अवसर हैं। तेजी से बढ़ते भारतीय बाजार के कारण दुनिया के अधिकांश देशों की भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) की ललक, प्रवासी भारतीयों द्वारा पिछले वर्ष 2023 में 125 अरब डॉलर से अधिक धन भारत को भेजने के साथ नए आर्थिक तकनीकी विकास के लिए बढ़ते कदम, चीन के प्रति बढ़ती नकारात्मकता के मद्देनजर भारत नए वैश्विक आपूर्तिकर्ता देश के रूप में उभरकर सामने आया है।

दुनिया में मजबूत लोकतंत्र और स्थिर सरकार के रूप में भारत की पहचान, दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी, देश में उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन, बड़े पैमाने पर पूंजीगत खर्च, गैर-जरूरी आयात में कटौती और अर्थव्यवस्था के बाहरी झटकों से उबरने की क्षमता देश के टिकाऊ विकास की बुनियाद बन सकती हैं। शेयर बाजार भी दुनिया में ऊंचाइयों पर रेखांकित होते हुए दिखाई दे रहा है।

भारत द्वारा पिछले वर्ष 2023 में की गई जी-20 की सफल अध्यक्षता से भारत के लिए अब नए आर्थिक लाभों की श्रृंखला शुरू हो गई है। इससे भारत से निर्यात, भारत में विदेशी निवेश, भारत में विदेशी पर्यटन और भारत के डिजिटल विकास का नया क्षितिज सामने आ रहा है। ज्ञातव्य है कि वैश्विक स्तर पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में गिरावट के रुझान के बीच भारत दुनिया के सर्वाधिक एफडीआई प्राप्त करने वाले 20 देशों की सूची में आठवें पायदान पर है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी मार्च, 2024 की शुरुआत में करीब 620 अरब डॉलर की ऊंचाई पर पहुंच गया है।

निस्संदेह, देश को कई आर्थिक चुनौतियों पर भी ध्यान देना होगा। देश के सामने डॉलर की तुलना में रुपये के गिरते हुए मूल्य की चुनौती भी है। भारत को आईएमएफ की उस चेतावनी पर भी ध्यान देना होगा जिसमें कहा गया है कि भारत में केंद्र और राज्यों का सामान्य सरकारी कर्ज जीडीपी के 100 फीसदी के पार पहुंच सकता है। साथ ही भारत के आर्थिक रणनीतिकारों को वैश्विक आर्थिक प्रतिकूल परिस्थितियों के मद्देनजर रक्षात्मक रणनीति बनाने के लिए भी तैयार रहना होगा। कोशिश हो कि हमारे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय नई पीढ़ी को भविष्य की जरूरतों से सुसज्जित करने के गढ़ बनें। छोटे और मध्यम उद्योगों, कृषि एवं हैंडीक्रॉफ्ट सेक्टर के लिए मार्केटिंग की नई रणनीति बनाई जाए। इससे रोजगार और निर्यात भी बढ़ेंगे।

हम उम्मीद करें कि विकसित भारत के लक्ष्य के साथ आने वाली सरकार आर्थिक और वित्तीय सुधार, कृषि और श्रम सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य की गुणवत्ता के साथ-साथ मजबूत बुनियादी ढांचे की मजबूती पर भी ध्यान दे। ऐसे रणनीतिक कदमों से देश वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक दुनिया का विकसित राष्ट्र बनने की डगर पर तेजी से आगे बढ़ता हुआ दिखाई दे सकेगा।

(यह लेखक के अपने विचार हैं।)

स्टेशन रोड, इंदिरा मार्केट, दुर्ग के प्रतिष्ठित संस्थान
विज्ञापन के लिए संपर्क करे:-
9827806026,
7869620239

Sargam
Musicals
Deals in All Kinds of Musical Instrument Sales & Repair
DURG:- Near Tarun Adlabs Station Road, Durg (C.G.) Durg, Ph. 2330588, 9826660688
RAIPUR:- Near Manju Mamta Reaustaurant, M.G. Road Raipur. Ph. 4013288, 9303876196

गंजेपन से मुक्ति मात्र 1 घंटे में
COMPLETE FAMILY SALON
हेयर रिप्लेसमेंट, 100% संतुष्टि की गारंटी
पहले बाद में
JITU'Z
CUT N SHINE
93009-11331
रंगोली बेंगल्स के सामने, जयसवाल इलेक्ट्रानिक के बाजू में इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्ग (छ.ग.)

प्रिंट और डीजिटल मीडिया में
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए
संपर्क करे
Mob.-:
9303289950
7987166110

श्रीकंचनपथ
छत्तीसगढ़

इनकम TAX
ITR फाईल
बनवायें मात्र 500/- में
TDS, GST, TAX Expert
सम्पर्क- शेखर गुप्ता
9300755544
onlytds@gmail.com
WWW.ONLYTDS.COM

खास खबर

ट्राइब्स ऑफ़ बस्तर' कॉफी टेबल बुक विमोचित

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बस्तर जिले के चित्रकोट महोत्सव में कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान द्वारा तैयार की गई ट्राइब्स ऑफ़ बस्तर कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया। इस अवसर पर वन मंत्री केदार कश्यप, विधायक जगदलपुर किरण सिंह देव, विधायक चित्रकोट विनायक गोयल एवं वन विभाग के अधिकारी उपस्थित थे। कॉफी टेबल बुक में कांगेर घाटी के आस-पास निवासरत धुरवा जनजातीय समुदाय के रीति-रिवाज, त्यौहार, स्थानीय मेला मंडई, जंगल और आदिवासी संस्कृति का संबंध, वन उपज पर निर्भरता, समुदाय में सह अस्तित्व की भावना इत्यादि का फोटोग्राफी के माध्यम से वर्णन किया गया है। इस किताब के माध्यम बस्तर के आदिवासी संस्कृति और उनका जंगलों से कैसा अनोखा संबद्ध है, उनकी प्राचीन ज्ञान प्रणाली, पारंपरिक चिकित्सा, अद्वितीय कला, जंगलों के प्रति आस्था की संस्कृति, स्थानीय संगीत और नृत्य आदि की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की झलक दर्शायी गई है।

न्यायालयों में 9 को होगा राष्ट्रीय लोक अदालत

सारंगढ़ बिलाईगढ़। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आगामी 9 मार्च को न्यायालय में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, प्रदेश के सभी जिला न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालयों, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व न्यायालय, तहसीलदार न्यायालय में राष्ट्रीय लोक अदालत खंडपीठ द्वारा समझौता योग्य मामलों का आपसी समझौता और राजीनामा से प्रकरणों का निराकरण किया जाएगा। प्रकरण की सुनवाई के दौरान पक्षकार और आवेदनकर्ता न्यायालय में उपस्थित हो सकते हैं या फिर जरूरी कार्य के कारण न्यायालय में उपस्थित नहीं हो पा रहे हैं, तो वे वकील के माध्यम से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़ सकते हैं और अपनी सहमति दे सकते हैं। उनकी सहमति के आधार पर खंडपीठ द्वारा प्रकरणों का निराकरण किया जाएगा।

जिला स्तरीय पशुमेला सम्पन्न

सूरजपुर। ग्राम पंचायत सिलफ्ली में एक दिवसीय जिला स्तरीय पशु मेला का आयोजन किया गया। उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवायें डॉ.आर.एस. बघेल के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में जिला स्तरीय पशुमेला एवं प्रदर्शनी 04 मार्च दिन सोमवार को सम्पन्न हुआ। मेला के माध्यम से पशुपालको को नस्ल सुधार, पशुधन स्वास्थ एवं रोग नियंत्रण, यूरिया पैरा उपचार, अजोला उत्पादन एवं विभागीय योजनाओं के संबंध में विभागीय विशेषज्ञों द्वारा दी गई। मेला में आयोजित पशु प्रदर्शनी में विभिन्न श्रेणियों के पशुधन ने भाग लिया जिसमें विभाग के विशेषज्ञों द्वारा निर्णय लेकर पशुपालको को श्रेणीवार पुरस्कृत किया गया। मेला में पोषण सूरक्षा की जागरूकता के लिए अण्डा खाने की प्रतियोगिता रखी गई एवं पर्यावरण सुरक्षा जागरूकता के लिए नारियल पौधा वितरीत किया गया। उक्त मेला में बाबुलाल राजवाडे, युग्मेश सिंह, ओमप्रकाश, अजय सिंह नेटी एवं डॉ. ओमप्रकाश पैकरा सहित पशुधन विकास विभाग से अतिरिक्त उपसंचालक डॉ. महेन्द्र कुमार पाण्डेय,नरेश यादव, सतेन्द्र कुमार सांडिल्य, विभिषण सिंह उपस्थित थे।

युवाओं के समग्र विकास में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका - राज्यपाल

सरकार की पहली प्राथमिकता बस्तर और सरगुजा के विकास की है: मुख्यमंत्री

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय बस्तर जगदलपुर का चतुर्थ दीक्षांत समारोह राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन के मुख्य आतिथ्य में विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर राज्यपाल एवं कुलाधिपति विश्वभूषण हरिचंदन ने कहा कि उच्च शिक्षा युवाओं के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए उन्नत ज्ञान, कौशल और अवसर प्रदान करता है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी उपस्थित थे।

समारोह में राज्यपाल श्री हरिचंदन ने अपने उद्बोधन में कहा कि उच्च शिक्षा के माध्यम से युवा गंभीर सोच क्षमताओं, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों को प्राप्त करते हैं, जो उन्हें जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। यह बेहतर करियर संभावनाओं के द्वार खोलता है, आर्थिक विकास में योगदान देता है और अपने समुदायों में सशक्त नेताओं और सक्रिय नागरिकों को तैयार करता है। एक साक्षर युवा किसी भी समाज, राज्य या देश के भविष्य का प्रतिनिधित्व करता है।

उन्होंने कहा कि बस्तर जैसे क्षेत्रों में छत्तीसगढ़ सरकार विशेष रूप से युवाओं से अपेक्षा करती है कि वे शांति, सद्भाव और प्रगति के मूल्यों को बनाए रखते हुए अपने समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास में सक्रिय रूप से भाग लें। उन्हें रोजगार क्षमता बढ़ाने और क्षेत्रीय विकास में योगदान देने के लिए शिक्षा और कौशल विकास पहल में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्होंने कहा कि बस्तर समृद्ध, प्राकृतिक प्रचुरता और जीवंत सांस्कृतिक परंपराओं से समृद्ध भूमि है। प्रकृति ने बस्तर को अप्रतिम सौंदर्य का उपहार दिया है। इसके हरे-भरे जंगल, बहती नदियाँ और खनिज युक्त मिट्टी इसकी पारिस्थितिक समृद्धि का प्रमाण हैं। बस्तर के आकर्षण के केंद्र में इसकी जीवंत सांस्कृतिक पच्चीकारी निहित है। गोंड, माड़िया और मुरिया जैसी जनजातियों ने अद्वितीय भाषाओं, रीति-रिवाजों और कला रूपों का पोषण किया है। बस्तर में आधुनिकता को अपनाते हुए सतत विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और समावेशी विकास को बढ़ावा देने की पहल की जा रही है। हरिचंदन ने कहा कि आधुनिक उपकरणों, प्लेटफार्मों और संसाधनों तक पहुंच के साथ, आज के युवाओं के पास गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य देखभाल जैसी गंभीर चुनौतियों से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार का उपयोग करने की क्षमता है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्ता व्यक्त की कि विश्वविद्यालय को केंद्रीय परियोजना ''मेरु'' के तहत 100 करोड़ रुपये के अनुदान की स्वीकृति मिली है, जिससे विश्वविद्यालय में सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी, जिनमे कई विभागों का संचालन भी शामिल है। ''विकसित भारत'' /2047 अभियान में शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के छात्रों की सक्रिय भागीदारी पर भी उन्होंने खुशी जताई। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम 2047 तक पूर्ण विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक पूरी पीढ़ी को शामिल करने के लिए एक मंच है। हम सब मिलकर एक प्रगतिशील और समावेशी भारत के निर्माण की दिशा में प्रयास करना जारी रखें। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर कहा कि बस्तर अंचल में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है। विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर निकले सभी स्नातक एवं स्नाकोत्तर छात्र बस्तर के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे। उन्होंने इस समारोह में पिछले दो सत्रों में 93 स्वर्ण पदक प्राप्त युवाओं से भेंट की, जिसमें 71 महिलाएं शामिल हैं। उन्होंने कहा कि सरकार की पहली प्राथमिकता बस्तर और सरगुजा के विकास की है। जनजातीय क्षेत्र को भी विकास की दौड़ में आगे बढ़ाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इन्हीं पिछड़े क्षेत्रों को आगे लाने के लिए अनेक योजनाएं प्रारंभ की हैं।श्री साय ने कहा कि बस्तर में बेटियां पढ़ रही हैं यह बहुत सुखद है। यहां शिक्षा को लेकर सकारात्मक परिवर्तन आया है। प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार ने संयुक्त रूप से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के मेरु योजना के अंतर्गत 100 करोड़ रुपए का अनुदान दिया है। इस अनुदान से बस्तर में उच्च शिक्षा के एक नये युग की शुरुआत होगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को 20 नये विभागों में 33 नये पाठ्यक्रम आरंभ करने की स्वीकृति प्रदान की गई है। इन नये पाठ्यक्रमों में बहुत से पाठ्यक्रम ऐसे हैं जो उद्यम के इच्छुक युवाओं के लिए काफी उपयोगी हैं।

सड़क दुर्घटना में जनवरी 2023 की तुलना में जनवरी 2024 में 9 प्रतिशत व मृत्यु में 07 प्रतिशत की कमी

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। प्रदेश में सड़क दुर्घटना में जनवरी 2023 की तुलना में जनवरी 2024 में 9 प्रतिशत तथा मृत्यु में 07 प्रतिशत की कमी आयी है। इसी प्रकार बिना फिटनेस के संचालित वाहनों पर 42,160 चालान किए गए तथा एएनपीआर कैमरा से किए गए 2372 चालान से लगभग 10 करोड़ रूपए की राशि वसूली की गई। यह जानकारी आज राजधानी रायपुर के पुलिस ट्रांजिट में आयोजित रोड सेफ्टी एण्ड इंफोर्समेंट कार्यशाला में दी गई।

राज्य पुलिस एवं परिवहन विभाग के प्रवर्तन अधिकारियों के लिये भारत शासन सड़क परिवहन राजमार्ग मंत्रालय, एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसपोर्ट डेव्हलपमेंट, अंतर्विभागीय लीड एजेंसी सड़क सुरक्षा और यातायात पुलिस छत्तीसगढ़ के समन्वय से यह कार्यशाला आयोजित की गई।

सड़क सुरक्षा के संवेदनशील विषय पर आधारित कार्यशाला के शुभारंभ उद्बोधन में पूर्व विशेष पुलिस आयुक्त नई दिल्ली, पूर्व पुलिस महानिदेशक अंडमान सत्येन्द्र गर्ग ने दिल्ली में किये गये विशेष प्रयासों से सड़क दुर्घटना मृत्यु दर में कमी के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी।

अंतर्विभागीय लीड एजेंसी सड़क सुरक्षा छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष श्री संजय शर्मा ने राज्य के सड़क सुरक्षा परिदृश्य, शासन के विभिन्न विभागों द्वारा किये गये प्रयासों एवं भावी योजनाओं के बारे में बताया कि इस वर्ष जनवरी में राज्य में 2291 जनजागरूकता के कार्यक्रम आयोजित हुए। 103 नवीन ब्लैकस्पाट का चिन्हांकन, नौ ट्रक ले बाय, 246 बस ले बाय, 02 ड्राइवर रेस्ट एरिया, 150 इंजीनियर का सड़क सुरक्षा प्रशिक्षण, टोल नाकों से गुजरने वाले बिना फिटनेस के संचालित वाहनों पर 42,160 चालान, एएनपीआर कैमरा से 2372 चालान से लगभग 10 करोड़ रूपये की राशि, 35 वे ब्रिज, 03 आटामेटेड टेस्टिंग सेंटर की स्थापना हई है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष कुल 13,468 सड़क दुर्घटनाओ में 6166 व्यक्तियों की मृत्यु हुई, पूर्व वर्ष की तुलना में वर्ष 2023 में सड़क दुर्घटनाओं में 1.4 प्रतिशत की वृद्वि तथा जनवरी 2023 की तुलना में जनवरी 2024 में सड़क दुर्घटना में 9 प्रतिशत, मृत्यु में 07 प्रतिशत एवं घायलों में 6 प्रतिशत की कमी हुई हैं। देश में छत्तीसगढ़ सड़क दुर्घटना एवं मृत्यु में 12वें क्रम में है। रायपुर जिला दुर्घटना मृत्यु में पूरे देश में 8वें नम्बर पर है।

शाम 05 से 09 बजे सर्वाधिक दुर्घटनाओ के कारण अधिक सावधानी की आवश्यकता हैं। शहरी क्षेत्रों में 34 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 66 प्रतिशत दुर्घटना हो रही है। सर्वाधिक सड़क दुर्घटना दुपहिया वाहन से हुई है। राज्य मे 06 ट्रामा सेंटर एवं 08 ट्रामा स्टेबालाइजेशन सेंटर स्वीकृत हैं। डायल 112 द्वारा सड़क दुर्घटना तथा मेडिकल एम्बुलेंस की लगभग साढ़े 5 लाख सूचनाओं में त्वरित प्रतिक्रिया/सहायता दी गई।

मुख्यमंत्री साय ने तीन दिवसीय चित्रकोट महोत्सव -2024 का किया शुभारंभ

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय बस्तर जिले में आयोजित तीन दिवसीय चित्रकोट महोत्सव-2024 का शुभारंभ किया। श्री साय ने वहां मुख्यमंत्री कन्या विवाह कार्यक्रम में 340 नव दंपत्तियों को आशीर्वाद प्रदान किया एवं उपहार स्वरूप नव विवाहित दंपत्तियों को 21-21 हजार रूपए की राशि और सामग्री भेंट की।

श्री साय ने शासन के विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के पात्र हितग्राहियों को सामग्री एवं सहायता राशि वितरित की। उन्होंने श्रीमती जसविंदर कौर को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के तहत रोज़गार प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र, किसानों को ट्रेक्टर, पॉवर वीडर, पॉवर स्प्रेयर, पैक हाउस, मछली पालकों को आइस बॉक्स, जाल और पूरक आहार, आंगनबाड़ी में आने वाले छह बच्चों को जाति प्रमाणपत्र का वितरण किया। पांच लाख रुपये तक के मुफ़्त इलाज के लिए हितग्राहियों को आयुष्मान कार्ड, रेटावंड निवासी रतन बघेल को उनकी माता तेंदूपत्ता संग्राहक खिरोबाई की आकस्मिक मृत्यु पर सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत दो लाख रुपए की सहायता राशि का चेक वितरित किया।

स्व सहायता समूह की दीदियों के लिए बना सरस मेला मिल का पत्थर

स्व सहायता समूह की दीदियों के लिए बना सरस मेला मिल का पत्थर, 45 लाख रुपए से अधिक का व्यवसाय हुआ 8 दिनों में

श्रीकंचनपथ न्यूज

कवर्धा। उपमुख्यमंत्री एवं गृह, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री विजय शर्मा के सकारात्मक पहल का असर दिखने लगा है। कबीरधाम जिले में पहली बार आयोजित 10 दिवसीय क्षेत्रीय सरस मेला में जिले वासियों ने बम्पर खरीदी की है। 10 दिवसीय मेला 26 फरवरी से प्रारंभ होकर 6 मार्च तक पीजी कॉलेज ग्राउंड कवर्धा में चल रहा है। मात्र 8 दिनों में ही मेले में 45 लाख रुपए से अधिक की खरीदी जिले वासियों द्वारा विभिन्न स्टालों से की गई है।

उल्लेखनीय है कि सरस मेला में लगभग 200 स्टाल लगाए गए हैं, जिसमें महिला स्व सहायता समूह के द्वारा विभिन्न उत्पादों का प्रदर्शन किया जा रहा है। इसके साथ ही क्राफ्ट मेला एवं स्वदेशी मंच एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के स्टाल लगे हैं। समूह द्वारा विभिन्न प्रकार के खाद्य सामग्रियां जैसे काजू उत्पादन जीरा फुल्ल चावल उत्पादन अचार पापड़ निर्माण टोकनी निर्माण बिस्किट्स सहित अन्य दैनिक उपयोग के घरेलू वस्तुओं का विक्रय मेले के माध्यम से किया जा रहा है जो मेले में आने वाले लोगों को बहुत पसंद आ रहे हैं।

इस संबंध में चर्चा करते हुए कलेक्टर कबीरधामजनमेजय महोबे ने बताया कि समूह द्वारा लगाए गए फूड स्टॉल की रौनक देखते ही बन रही है। छत्तीसगढ़ी व्यंजनों में चीला चौसेला फराह साबूदाना बड़ा मुंगोड़ी भजिया तथा चाइनीस पकोड़ा के साथ दोसा पाव भाजी चाऊमीन आदि के स्वादिष्ट व्यंजन लोगों की पसंद बनी हुई है यही कारण है कि फूड स्टॉल में लगातार भीड़ बनी रहती है। पॉपकॉर्न बनाने वाले समूह द्वारा प्रत्येक दिन लगभग 6 से 7 हजार रुपए का व्यवसाय किया जा रहा है जो अपने आप में उल्लेखनीय है। जनमेजय महोबे ने आगे कहा कि सरस मेले से ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने वाली महिला स्व सहायता समूह को बेहतर अवसर मिला है कि वह अपने उत्पादों को आम जनता तक सीधे पहुंच रही है। उत्पादों की गुणवत्ता के कारण लोगों ने इसे हाथों हाथ लिया है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत कबीरधाम से संदीप कुमार अग्रवाल ने चर्चा करते हुए बताया कि मेला प्रारंभ से व्यवसाय धीरे-धीरे बढ़ता गया और आठवें दिन 45 लाख रुपए से अधिक का व्यवसाय हो गया है।

उम्मीद की जा रही है कि मेले के बचे दो दिनों में यह व्यवसाय 50 लाख रुपए से अधिक हो सकता है।मेला 6 मार्च तक चलेगा तथा मेले में सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए मनोरंजन के साथ घरेलू सामग्रियों का प्रदर्शन लोगों को अपनी ओर खींच रहा है।

Since 1972
CROWN® - TV
Choice Of Millions
LED Available 16 -20 -22 - 24 - 32-40-50-55-65

Premier sales
8959493000
A Leela Electronics
9425507772
Reena Electronics
9329132299
Shree Electronics
7000827361
CONTACT
Maa Durga Electronics
9827183839
Rohit Electronics
94242-02866
Authorised Distributers For Chhattisgarh
Trade Enquiry: 98262-52372

खास खबर...

छत्तीसगढ़ के राजस्व न्यायालय होंगे कम्प्यूटरीकृत और इंटरनेट कनेक्टिविटी से लैस

रायपुर। छत्तीसगढ़ में राजस्व न्यायालयों का आधुनिकीकरण का काम होगा। इसके तहत राजस्व न्यायालयों को कम्प्यूटरीकृत करने के साथ ही इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा दी जाएगी। इसके अलावा लैण्ड रिकार्ड का डिजीटीलाईजेशन का काम होगा। डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम के अंतर्गत सचिव राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग भुवनेश यादव ने प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट की बैठक यह निर्णय लिया गया है।

बैठक में राज्य के 572 राजस्व न्यायालय (ई-कोर्ट) के लिये कम्प्यूटर, प्रिंटर तथा इन्टरनेट कनेक्टिविटी प्रदाय किया जाएगा और 18 तहसीलों में मॉडर्न रिकॉर्ड रूम के लिये जिलों को आबंटन करने का निर्णय लिया गया। साथ ही डीआईएलआरएमपी योजनान्तर्गत भारत सरकार द्वारा सर्वे-रिसर्वे, राजस्व न्यायालय (ई-कोर्ट) तथा मॉडर्न रिकॉर्ड रूम के लिये दिये गये स्वीकृति के आधार पर प्रदेश में सर्वे-रिसर्वे के लिए चांदा-मुनारा की स्थापना की जाएगी।

बैठक में प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट के सचिव एवं संचालक भू-अभिलेख रमेश कुमार शर्मा, महानिरीक्षक पंजीयन किरण कौशल, राजस्व अधिकारी वित्त सुश्री अनीता सोनी, डिप्टी कलेक्टर बीएस सिदार, शहरी प्रशासन एवं विकास रायपुर यूके धालेन्द्र, एडिशनल सीईआ चिप्स शशांक पाण्डेय, उपायुक्त भू-अभिलेख मधु हर्ष एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

शिक्षक पद की ऑनलाइन काउंसिलिंग 7 मार्च तक

रायपुर। शिक्षक सीधी भर्ती 2023 में शिक्षक पद हेतु अभ्यर्थियों की पंचम चरण की ऑनलाइन काउंसिलिंग 6 मार्च 2024 दोपहर 3 बजे से 7 मार्च 2024 रात्रि 10 बजे तक स्कूल शिक्षा विभाग की वेबसाईट https://edu-portal.cg.nic.in/ में प्रारंभ की जा रही है। उक्त काउंसिलिंग में व्यापम की परीक्षा परिणाम के अनुसार शिक्षक पद के कट ऑफ रैंक की विस्तृत जानकारी विभाग के पोर्टल https://eduportal.cg.nic.in/ पर देखी जा सकती है।

उप संचालक लोक शिक्षण संचालनालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस काउंसिलिंग में कुल 1021 अभ्यर्थियों को शामिल किया गया है। शालाओं के आबंटन पश्चात् अभ्यर्थियों का दस्तावेज सत्यापन आबंटित संभाग के कार्यालय संयुक्त संचालक, शिक्षा संभाग, बस्तर/सरगुजा में किया जायेगा। अभ्यर्थी समस्त आवश्यक मूल अभिलेखों सहित निर्धारित समयावधि में कार्यालय संयुक्त संचालक, शिक्षा संभाग में उपस्थिति प्रदान करेंगे। दस्तावेज सत्यापन तिथि की सूचना अभ्यर्थियों के लागिन आईडी तथा पंजीकृत मोबाईल नंबर पर पृथक से प्रदान की जायेगी। दस्तावेजों का सत्यापन 9 मार्च 2024 से 11 मार्च 2024 तक संभागीय संयुक्त संचालक, कार्यालय में किया जायेगा। पात्र अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र एवं कार्यभार ग्रहण प्रारंभ में संभागीय संयुक्त संचालक, कार्यालय में दिनांक 9 मार्च 2024 से 11 मार्च 2024 तक किया जायेगा, इसके पश्चात् अभ्यर्थी विद्यालयों में कार्यभार ग्रहण करेंगे।

नई न्याय प्रणाली मानवीय संवेदनाओं को देती है सर्वोच्च प्राथमिकता: मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

मुख्यमंत्री साय की उपस्थिति में छत्तीसगढ़ पुलिस एवं हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के मध्य नवीन आपराधिक कानूनों पर प्रशिक्षण हेतु हुआ एमओयू

ऐसा एमओयू करने वाला छत्तीसगढ़ पहला राज्य

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की उपस्थिति में पुलिस मुख्यालय, नवा रायपुर में नवीन आपराधिक कानूनों पर पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने हेतु छत्तीसगढ़ पुलिस एवं हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, नवा रायपुर के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किये गए। एमओयू के तहत नवीन कानूनों भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, भारतीय न्याय संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 पर पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि नवीन कानून छत्तीसगढ़ राज्य के कानूनी परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होंगे। नवीन अपराधिक कानूनों पर छत्तीसगढ़ के पुलिस अधिकारियों को व्यापक रूप से प्रशिक्षण प्रदाय करने हेतु हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय एवं छत्तीसगढ़ पुलिस के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना कानूनी प्रणाली को मजबूत करने एवं सभी के लिए त्वरित न्याय सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सरकार नवीन आपराधिक कानूनों की मंशानुरूप छत्तीसगढ़ के नागरिकों को त्वरित एवं समुचित न्याय प्रदान करने कृत संकल्पित है। हमारी नई न्याय प्रणाली मानवीय संवेदनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। यह भारतीय न्याय प्रणाली का बहुत बड़ा टर्निंग पाईंट है एवं देश में नये अध्याय की शुरूआत होती है। जहां अंग्रेजों के कानून में दंड पर जोर दिया गया है, वहीं देश के नवीन कानून न्याय की बात करता है।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि तीन कानूनों के संदर्भ में जब चर्चा प्रारंभ हुई तब हमने भी राज्य में विचार विमर्श कर निर्णय लिया कि महिलाओं के विरूद्ध कोई अपराध घटित होता है तो इस मामले में समुचित कार्रवाई के लिए महिला थाना की संख्या बढ़ानी चाहिए। इसे हमने संकल्प के रूप में लेकर प्रथम

बजट में ही जिलों में नवीन महिला थाना खोले जाने का प्रावधान किया है। 07 साल से अधिक के प्रकरण में फोरेंसिक जांच होनी चाहिए। हम फोरेंसिक जांच को और अधिक सशक्त बनाएंगे। इस हेतु बिलासपुर यूनिवर्सिटी से करार कर एमएससी इन फोरेंसिक की पढ़ाई हो इसके प्रयास किये जा रहे हैं। नवीन कानून में संगठित अपराध, आतंकवाद को परिभाषित किया गया है एवं माब लिंचिंग एवं अनाचार के मामलों में मृत्युदंड का प्रावधान किया गया है। उद्बोधन के अंत में उनके द्वारा छत्तीसगढ़ पुलिस एवं हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय को बधाई दी गई।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित केन्द्रीय गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा कानून में संशोधन हेतु गठित समिति के अध्यक्ष प्रो. रणबीर सिंह ने अपने उद्बोधन में नवीन कानूनों के ड्राफ्ट तैयार करने एवं इसे लागू कराने के सबंध में उपस्थित अधिकारियों को महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। साथ ही उनके द्वारा नवीन कानूनों के संबंध में उपस्थित अधिकारियों से उनकी जिज्ञासा के सवालों का उत्तर एवं परिचर्चा की गई। उन्होंने बताया कि 'छत्तीसगढ़ देश का प्रथम राज्य है, जिसने पुलिस अधिकारियों के क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए आज यह एमओयू पर करार किया है।

इस अवसर पर सर्वप्रथम स्वागत भाषण में पुलिस महानिदेशक, छत्तीसगढ़ अशोक जुनेजा ने कहा कि भारत की संसद द्वारा पारित किये गये 3 नवीन कानून जो 01 जुलाई, 2024 से पूरे देश में लागू हो रहे हैं। इन कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु दिल्ली एवं चंडीगढ़ द्वारा किये जा रहे कार्य का अध्ययन एवं अवलोकन कर देश के प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थानों से चर्चा कर प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार की गई है। नवीन कानूनों के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षण व साफ्टवेयर-हार्डवेयर अपग्रेडेशन पर होने वाले व्यय का आंकलन कर शासन को बजट प्रस्ताव, नवीन कानून के आवश्यकता अनुरूप महिला विवेचकों के पद एवं अन्य प्रस्ताव, 'विटनेश प्रोटेक्शन स्कीम' का ड्राफ्ट एवं रीडिंग मटेरियल तैयार किया गया। जनमानस को नवीन कानून के बारे में जागरूक करने हेतु 'गणतंत्र दिवस परेड स्थल' पर विभिन्न पोस्टर, पाम्पलेट एवं झांकी तैयार कर प्रदर्शित की गई। जिला स्तर पर नवीन कानूनों के प्रति जागरूकता एवं व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा।

कार्यक्रम के अन्य विशिष्ट अतिथि कुलपति, हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के प्रो.(डा.) व्हीसी विवेकानंदन जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ पुलिस और एचएनएलयू के बीच आज जो करार हुआ है। वह पुलिस अधिकारियों को नये कानूनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण कदम है। इस दौरान उन्होंने भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधानों के बारें में व्यापक रूप से बताया।

इस अवसर अपर मुख्य सचिव (गृह) मनोज पिंगुआ, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक हिमांशु गुप्ता, एसआरपी कल्लूरी, पवन देव प्रदीप गुप्ता, विवेकानंद, अमित कुमार एवं पुलिस मुख्यालय में पदस्थ अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी सहित विभिन्न रेंज के पुलिस महानिरीक्षक एवं पुलिस अधीक्षक भी उपस्थित रहें। मंच संचालन उप पुलिस महानिरीक्षक पारूल माथुर द्वारा किया गया।

बुजुर्गों को तीर्थ यात्रा का पुण्य दे रही है सरकार रामलला का दर्शन सौभाग्य की बात

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने राजधानी रायपुर के रेल्वे स्टेशन से रामलला दर्शन योजना के स्पेशल ट्रेन को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस आस्था ट्रेन से छत्तीसगढ़ के लगभग 850 राम भक्त अयोध्या में राम लला के दर्शन के लिए रवाना हुए। श्रद्धालु दर्शन करने के लिए बहुत उत्साहित नजर आए गरियाबंद जिले के देवभोग निवासी 60 वर्षीय लालधर यादव, तुलसी राम यादव, सुनाधर यादव, मकरन नायक और 60 वर्षीय चाम्पर नेताम ने बताया कि प्रभु श्रीराम के अयोध्या धाम में प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद पहली बार दर्शन करने जा रहे हैं। मन में एक अलग खुशी महसूस हो रही है।

गरियाबंद जिले के 60 वर्षीय फूलकुंवर ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की सार्थक पहल से प्रभु श्रीरामलला के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है। प्रशासन ने गरियाबंद जिले से रायपुर स्टेशन तक लाने के लिए वाहन की सुविधा उपलब्ध कराई थी। हमारे गांव से और भी साथी लोग भी बड़ी संख्या में प्रभु श्रीराम के दर्शन करने

एक साथ ट्रेन में जा रहे हैं।

गरियाबंद जिले के गांव हरदीभाठा के 70 वर्षीय सोनबाई और उषा बाई पटेल ने मुख्यमंत्री साय के प्रति आभार जताया है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ शासन द्वारा श्रद्धालुओं के लिए अच्छी व्यवस्था, साफ सुथरा ट्रेन, नाश्ता भोजन की भी उत्तम व्यस्था की गई है। रायपुर जिले के आरंग निवासी 60 वर्षीय नंदलाल, सकरी गांव के 62 वर्षीय छन्नूलाल साहू, 60 वर्षीय मस्तराम ने बताया कि प्रभु श्रीराम के दर्शन करने के लिए मन बहुत उत्सुक है। छत्तीसगढ़ शासन ने श्रीरामलला दर्शन योजना की शुरूआत की है। यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए बहुत ही लाभदायक है। उम्र के इस पड़ाव में तीर्थ यात्रा करने का मन सभी का रहता है। किंतु आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण यात्रा नहीं कर पाते है। ऐसे परिवारों के बुजुर्गों को इस योजना का प्रत्यक्ष लाभ मिल रहा है।

मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए सकरी गांव की 62 वर्षीय जानकी बाई और अकोली गांव की 60 वर्षीय सोनबती साहू ने बताया कि उन्हें प्रभु श्रीराम का बुलावा आया है। दर्शन करने मन उत्सुक है।

खेल हमें जीवन जीने की कला भी सिखाती है: खेल मंत्री वर्मा

■ ग्राम हिरमी में आयोजित राज्यस्तरीय रात्रिकालीन क्रिकेट खेल प्रतियोगिता में पहुंचे खेल मंत्री

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री टंकराम वर्मा सिमगा विकासखंड के ग्राम हिरमी में चल रहे राज्यस्तरीय रात्रिकालीन क्रिकेट प्रतियोगिता को सम्बोधित करते हुए कहा कि खेल से हमें साहस, अनुशासन, समन्वय और टीम भावना की सीख मिलती है। यह जीवन भर काम आता है। उन्होंने युवाओं से पढ़ाई के साथ-साथ खेलों पर भी ध्यान देने की अपील की।

खेल एवं युवा कल्याण मंत्री वर्मा ने कहा कि खेल शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास के लिए जरूरी है। युवा अपनी शक्ति का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करें। युवा ही देश के भविष्य हैं। उन्होंने कहा कि

खेल में या तो हार होगी या जीत। हमे हार से नही घबराना है, बल्कि हार के कारणों को जानकर और उन कमियों को दूर करके अधिक आत्मविश्वास के साथ सफलता के लिए प्रयास करना है। उन्होंने इस आयोजन के लिए इंदिरा क्रिकेट क्लब के पदाधिकारियों को बधाई दी। इस अवसर पर ग्राम पंचायत हिरमी के सरपंच मनसुख जायसवाल, तिल्दा जनपद सभापति शिवशंकर वर्मा, मनहरण साहू, ललित भारती, चंद्रप्रकाश यदु, अन्य जनप्रतिनिधिगण सहित बड़ी संख्या में क्रिकेट प्रेमी उपस्थित थे।

संस्कृत विद्यामण्डलम् में कर्मकाण्ड, ज्योतिष विज्ञान और योगदर्शन में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स होंगे आरंभ

शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने दिए निर्देश

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। धर्म और संस्कृति को सहेज कर रखने के लिए अब छत्तीसगढ़ में कर्मकाण्ड, ज्योतिष विज्ञान और योगदर्शन में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स शुरू किए जायेंगे। यह निर्णय आज छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्यामण्डलम् की बैठक के दौरान लिया गया। शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने मंगलवार को छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्यामण्डलम् और राज्य ओपन स्कूल की साधारण सभा की बैठक ली।

छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्यामण्डलम् की बैठक में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई एवं निर्णय लिए गए।

राज्य में सभी जिलों में कक्षा 12 तक के शासकीय संस्कृत विद्यामण्डलम् के स्कूल खोलने का निर्णय लिया गया। अभी तक राज्य में कुल 95 स्कूल हैं जिनमें से 1 शासकीय, 8 अनुदान प्राप्त और 86 निजी स्कूल है। विभाग की तरफ से नए स्कूल का प्रस्ताव रखा गया। जिस पर शिक्षा मंत्री ने निजी स्कूलों को अनुदान देकर बेहतर ढंग से संचालन के निर्देश दिए। जिससे सरकार को नवीन स्कूल बिल्डिंग निर्माण और उसके संचालन के लिए अतिरिक्त आर्थिक बोझ नहीं पड़ेगा।

शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कक्षा 1 से 4 तक मिलने वाले मानदेय 50 रुपए से बढ़ाकर 100 रुपए कर दिया है। इसके अलावा कक्षा 5 से 12 तक मिलने वाले मानदेय में भी 50 रुपए की वृद्धि के निर्देश दिए हैं।

विभाग द्वारा पुस्तक उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा गया। जिस पर शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने ओपन स्कूल द्वारा उपलब्ध पुस्तकों को आधिकारिक मुद्रक से मुद्रित कराने के निर्देश दिए है। जिससे विभाग को पुस्तकों में करीब 30 प्रतिशत राशि की बचत होगी।

बृजमोहन अग्रवाल ने समाज में कर्मकाण्ड कराने वालों को सही शिक्षा देने के लिए कर्मकाण्ड, ज्योतिष विज्ञान और योगदर्शन में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स के शुरू करने के निर्देश दिए जिसका आगामी सत्र से ही संचालन शुरू हो जाएगा। विद्यामंडलम की परीक्षा संचालन में होने वाली परेशानी को देखते हुए शिक्षा मंत्री ने माध्यमिक शिक्षा मंडल के स्कूलों को परीक्षा केंद्र बनाने को कहा है।

नंदनी रोड, लिंक रोड, सर्कुलर मार्केट, जवाहर मार्केट पावर हाउस, भिलाई के प्रतिष्ठित संस्थान विज्ञापन के लिए संपर्क करें:-
9303289950, 9827806026, 8962815243

इंडो-वेस्टर्न आउटफिट में पलक तिवारी दिखीं बला की खूबसूरत, फोटोज देख फैंस हुए मदहोश

श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी दिन पर दिन और भी ज्यादा खूबसूरत होती जा रही हैं। वो हर बार अपनी ग्लैमरस तस्वीरें शेयर कर फैंस को इंप्रेस करती रहती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट इंडो-वेस्टर्न आउटफिट में फोटोज शेयर की हैं। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस का कातिलाना लुक देखकर फैंस मदहोश हो गए हैं।

एक्ट्रेस पलक तिवारी हमेशा अपने हॉट एंड स्टनिंग लुक से सोशल मीडिया पर फैंस के बीच लाइमलाइट लूट लेती हैं। वो जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो वो चंद ही मिनटों में वायरल होने लगती हैं। साथ ही फैंस उनकी तारीफ करते हुए भी नहीं थकते हैं।

इन तस्वीरों में आप देख सकते हैं पलक तिवारी ने रेड कलर का इंडो-वेस्टर्न आउटफिट पहना हुआ है, जिसमें वो किलर पोज देते हुए नजर आ रही हैं।

अभिनेत्री पलक तिवारी ने कानों में इयररिंग्स, हाथों में चूड़ी, हाई हील्स पहनकर और साथ ही ड्रेस के मैचिंग का दुपट्टा पहनकर अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। एक्ट्रेस पलक तिवारी अपनी एक्टिंग से ज्यादा अपने लुक्स के लिए जानी जाती हैं। हालांकि इन तस्वीरों को देखकर फैंस उनकी तारीफों के पुल बांधते नहीं थक रहे हैं।

पलक तिवारी ने सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान से बॉलीवुड में डेब्यू किया है। बता दें कि अब वो जल्दी ही द वर्जिन ट्री टाइटल से बन रही फिल्म में दिखाई देंगी।

एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। और आए दिन अपनी फोटोज और वीडियोज इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर करती रहती हैं।

अचानक से बहुत ज्यादा ठंड लगना नॉर्मल नहीं, हो सकता है इस बीमारी का लक्षण

अगर अचानक से बहुत ज्यादा ठंड लगने लगे तो इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि यह हाइपोथर्मिया का लक्षण भी हो सकता है। यह एक इमरजेंसी मेडिकल कंडीशन होती है। जब शरीर का तापमान अचानक से गिरने लगता है और शरीर ठंडा पड़ने लगता है तब यह समस्या होती है। इस स्थिति में बॉडी टेंपरेचर 95 फॉरेनहाइट के नीचे चला जाता है। मायोक्लोनिक की रिपोर्ट के अनुसार, शरीर का सामान्य से ज्यादा तापमान गिरना कई अंगों के लिए नुकसानदायक हो सकता है। इससे हार्ट और नर्वस सिस्टम सही तरह काम नहीं कर पाते हैं। अगर सही समय पर हाइपोथर्मिया का इलाज न हो तो हार्ट फेल होने और जान जाने का जोखिम हो सकता है। इस बीमारी का सबसे ज्यादा खतरा ठंडे मौसम में रहता है। आइए जानते हैं इसके लक्षण और बचाव के बारें में।

हाइपोथर्मिया क्या होता है

हाइपोथर्मिया शरीर के तापमान को कम होने की कंडीशन है। दरअसल, हमारे शरीर का एक सामान्य तापमान होता है, जो उम्र, लिंग और हेल्थ कंडीशन पर निर्भर करता है। शरीर का सामान्य तापमान 98.6 डिग्री फारेनहाइट से 100.4 डिग्री फारेनहाइट तक माना जाता है। इस तापमान को कुछ हार्मोन कंट्रोल करते हैं लेकिन जब शरीर का तापमान सामान्य से कम होने लगता है तो ऐसी स्थिति हाइपोथर्मिया कहलाती है।

हाइपोथर्मिया के क्या लक्षण हैं

- बहुत ज्यादा कंपन और थकान।
- सांस लेने में दिक्कत।
- बोलने में परेशानी होना।
- मानसिक क्षमता प्रभावित होना।
- याददाश्त कमजोर होने लगना।
- हाथ-पैरों में सुन्नपन महसूस होना।

हाइपोथर्मिया से किन लोगों को ज्यादा खतरा

हाइपोथर्मिया एक ऐसी कंडीशन है जो किसी को भी हो सकती है लेकिन नवजात शिशु, बढ़ती उम्र या किसी हार्मोनल समस्या के मरीज को इससे सबसे ज्यादा खतरा होता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि इन लोगों में सामान्य शारीरिक तापमान बनाए रखने की क्षमता बेहद कम होती है। अगर कोई डिप्रेशन और साइकोटिक दवाईयों का सेवन कर रहा है तो उनमें यह समस्या देखने को मिल सकती है।

बेड के नीचे ऐसे करें फ्लोर की सफाई, बिना बेड को हटाए ऐसे फ्लोर हो जाएगा साफ?

घर के कुछ हिस्से ऐसे होते हैं, जहां रोज रोज सफाई करना बहुत मुश्किल होता है। इन्हीं जगहों में से एक जगह है बेड के नीचे की जगह। रोजाना बेड के आसपास के फर्श की सफाई तो बड़ी आसानी से हो जाती है लेकिन बेड के नीचे के फर्श की सफाई करना थोड़ा मुश्किल होता है। अब रोज रोज तो बेड को हटाकर फर्श की सफाई करी नहीं जा सकती है। ऐसे में कुछ तरीकों से आप बेड के नीचे की सफाई बड़ी ही आसानी से कर सकते हैं। बेड के नीचे की गंदगी को साफ करने के लिए फॉलो करें ये टिप्स...

झाड़ू में बांधे लंबी डंडी

बेड के नीचे अगर झाड़ू से सफाई करी जाती है तो झाड़ू सिर्फ बेड के आधे हिस्से तक ही पहुंचती है। ऐसे में झाड़ू को लंबा करने के लिए आप झाड़ू में एक लंबी डंडी बांध लीजिए। इससे बहुत ही आसानी से झाड़ू बेड के कोनो तक भी पहुंच जाएगी।

वैक्यूम क्लीनर का करें इस्तेमाल

अगर आपके घर में वैक्यूम क्लीनर है तो आप वैक्यूम क्लीनर का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। वैक्यूम क्लीनर की नली को लंबा करने के लिए आप एक लंबे पाइप का इस्तेमाल करें, जिससे कोने तक वैक्यूम क्लीनर आसानी से सफाई कर सकें।

फ्लोर को करें ऐसे साफ

बेड के नीचे के फ्लोर को साफ करने के लिए सबसे पहले एक बाल्टी में गर्म पानी लें। गर्म पानी में थोड़ा सा लिक्विड सोप या डिटर्जेंट डालें। साथ में थोड़ा सा विनेगर भी गर्म पानी में डालें। इस मिश्रण से फर्श को साफ करने से गंदगी के साथ साथ बदबू भी निकल जाएगी। फर्श को साफ करने के लिए पोछे के कपड़े को एक लंबे डंडे पर लपेट लें। इसे पानी में भिगोकर बेड के नीचे की सफाई करें।

मेरे लिए किरदार से प्यार करना जरूरी है: राशि खन्ना

यंग पैन-इंडिया स्टार राशि खन्ना अपनी आगामी एक्शन फिल्म योद्धा से अपने फैंस को धमाकेदार एंटरटेनमेंट परोसने के लिए पूरी तैयार हैं। एक्ट्रेस ने सिद्धार्थ मल्होत्रा अभिनीत फिल्म के बारे में बात की और फिल्म के ट्रेलर लॉन्च के दौरान उन्हें एक न्यूकमर की तरह कैसा महसूस हुआ पर खुलकर अपने विचार व्यक्त किये। इस बारे में बात करते हुए कि एक हिंदी फिल्म करने में उन्हें इतना समय क्यों लगा पर उन्होंने कहा कि वह एक ऐसी स्क्रिप्ट चाहती थीं जो अच्छी हो। वर्सेटाइल पावरहाउस ने कहा, मैं सिर्फ एक अच्छी और सेंसिबल स्क्रिप्ट का इंतजार कर रहीं थी। मेरे लिए किरदार से प्यार करना जरूरी है। फि ल्म करने के लिए एक अच्छा पैकेज होना चाहिए और यह फिल्म एक फुल पैकेज की तरह थी।

राशी ने योद्धा के बारे में कहा, मुझे लगता है कि यह एक पैसा वसूल फिल्म है। उन्होंने कहा कि फिल्म में थ्रिल, रोमांस और एज ऑफ द सीट वाला जायका है। राशि ने बताया कि जब ट्रेलर लॉन्च किया गया था, वह बहुत नर्वस थी। क्योंकि वह श्योर नहीं थी कि हिंदी फिल्मों में उनका स्वागत कैसे किया जाएगा। उन्होंने बताया, फिल्म को लेकर बहुत ज्यादा एक्साईटमेंट और नर्वसनेस थी।योद्धा में राशि खन्ना और सिद्धार्थ मल्होत्रा मुख्य भूमिका में हैं, जिसमें दिशा पटानी भी अहम भूमिका निभा रहीं हैं। सागर अंब्रे और पुष्कर ओझा द्वारा निर्देशित, योद्धा 15 मार्च, 2024 को थिएट्रिकल रिलीज के लिए पूरी तरह तैयार है।

बॉलीवुड के दो दिग्गज एक्टर छत्तीसगढ़ी फिल्म 'आखरी फैसला' में करने जा रहे हैं अभिनय

तिरंगा फिल्म के गेंडास्वामी और यमला पगला दिवाना के प्रसिद्ध अभिनेता गफ्फार करेंगे खूंखार विलेन का रोल

बॉलीवुड के दो दो खूंखार विलेन की खलनायकी अब छत्तीसगढी फिल्म में भी देखने को मिलेगी। जी हां आप सही पढ रहे है। आपको बता दे कि 90 दशक की सबसे ब्लॉक बास्टर एवं राजकुमार व नाना पाटेकर अभिनीत हिन्दी फिल्म तिरंगा के प्रलयनाथ गेन्डास्वामी दीपक शिरके एवं धर्मेन्द्र व सन्नी देओंल के साथ कई फिल्मों में खलनायकी कर चुके फिल्म अभिनेता अब्दुल गफ्फार खान बिलासपुर के आस पास बन रही छत्तीसगढी फिल्म 'आखिरी फैसला' में खूंखार विलेन का रोल करने जा रहे है। इसमें जहां एक ओर गेन्डास्वामी अस्पताल के संचालक रहते है वहीं गफ्फार इसमें डॉन की भूमिका निभा रहे है। ज्ञातव्य हो कि अब छॉलीवुड में बॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेताओं को बुलाकर उनसे रोल करवाने का सिलसिला प्रारंभ हो गया है।

छॉलीवुड में सबसे पहले बॉलीवुड के अभिनेताओं रज्जाक खान, मुश्ताक खान और शहजाद खान को खलनायक बिलासपुर के ही प्रसिद्ध डायरेक्टर शिवनरेश केशवरवानी ने बनाया था, इसके अलावा बॉलीवुड एक्टर गुफी पेंटल सहित और भी बॉलीवुड के कई अभिनेता छत्तीसगढी फिल्मों में एक्ट कर चुके है।

इन दिनों भाई भाई फिल्म प्रोडकशन के बेनर तले एवं डी के देवांगन द्वारा निर्मित और प्रसिद्ध डायरेक्टर आदिश कशयप द्वारा निर्देशित छत्तीसगढी फिल्म आखिरी फैसला की शूटिंग बिलासपुर के आगे रतनपुर रोड में स्थित ग्राम बोनी के एवं आस पास के क्षेत्रों में जोर शोर से प्रारंभ हो गई है। इस फिल्म की शूटिंग रानीगांव, बिलासा एयरपोर्ट, खूंटा घाट, सहित बिलासपुर के आसपास बिलासपुर सिटी के आस पास ही होगी। इस फिल्म की खास बात यह है कि इसमें दो दो

बॉलीवुड के प्रसिद्ध एक्टर के साथ छॉलीवुड के कई सुप्रसिद्ध अभिनेता अपने अभिनय का जलवा दिखायेंगे। वहीं फिल्म में एकशन के लिए दक्षिण के सबसे सुप्रसिद्ध फाईट मास्टर सतीश अन्ना को बुलाया गया है, यानि की इस फिल्म में भी दक्षिण भारतीय फिल्मों के जैसा एकशन भी दर्शकों को मिलेगा।

फिल्म के प्रोडयूसर डी के देवांगन ने बताया कि इस फिल्म के डायरेक्टर प्रसिद्ध निर्देशक आदित्य कश्यप कर रहे है। वही इसकी सहनिर्माता यामिनी गणपति देवांगन है। प्रोडयूसर श्री देवांगन ने आगे बताया कि इस फिल्म में बॉलीवुड के दो जबर्दस्त एक्टर तिरंगा फिल्म के गेन्डा स्वामी यानि दीपक शिरके एवं हिन्दी फिल्म यमला पगला दिवाना सहित धर्मेन्द्र, सन्नी देओल के साथ कई फिल्मों के साथ ही नया रामायण में कुंभकरण का रोल अदा करने वाले अब्दुल गफ्फार खान पहली बार किसी छत्तीसगढी फिल्म यानि आखिरी फैसला में अभिनय कर रहे है। ज्ञातव्य हो कि 90 की दशक की ब्लॉक बस्टर राजकुमार व नाना पाटेकर अभिनीत फिल्म तिरंगा में प्रलयनाथ गेंडा स्वामी का ऐसा जर्बस्त अभिनय किया था कि इस फिल्म में रातो रात स्टार बन गये थे और खलनायकी की दुनिया में तहलका मचा दिया था। उसके बाद कई फिल्मों में लगातार खूंखार विलेन का भूमिका अदा की। आपको बता दें इस फिल्म आखरी फैसला में सस्पेंस भी है जिसका भेद बाद में खुलता है कि गेन्डा स्वामी उर्फ दीपक शिरके एक खलनायक है जो एक अस्पताल के प्रमुख संचालक है। ये तो फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा कि गेन्डा स्वामी किस प्रकार और क्या रोल किये है?

फिल्म के डायरेक्टर आदिश शर्मा ने बताया कि इस फिल्म के हिरों रवि साहू, अमित चक्रवर्ती, गणेश देवांगन, जिमीकांदा वाला तरूण देवांगन और हिरोईन दीक्षा जयसवाल, सोनाली सहारे,सिमरन देवागन, करिश्मा सार्वा है। वहीं इस फिल्म में छत्तीसगढी एवं भोजपूरी के सुपर अभिनेता प्रदीप शर्मा, सलीम अंसारी, जेठू साहू, लक्की राजा उपासना वैष्णव, बुधवारा देवांगन, अजय शर्मा, उषा विश्वकर्मा, सरला सेन, महावीर सिंह चौहान, उर्वशी साहू, भानुमति कोसरे, अशोक साहू, चारू दुबे, अखिलेश वर्मा सहित छॉलीवुड के और कई प्रसिद्ध एक्टर इसमें अपनी प्रमुख भूमिका निभा रहे है। उल्लेखनीय है कि इस फिल्म में प्रदीप शर्मा सरपंच बने है जबकि लक्की राजा फूफा, उपासना वैष्णव हिरोइन की मों, बुधवारा देवांगन हिरोइन दीक्षा जायववाल की मां की रोल निभा रही है।

दुर्ग, सुपेला और कोहका प्रतिष्ठित संस्थान विज्ञापन के लिए संपर्क करें:-

9303289950, 9827806026, 8962815243

Paul Sir

BANK P.O. & CLERK, MBA, RLY., SSC.

रामा कोचिंग

135,NEW CIVIC CENTER, Bhilai Ph. 0788-6560005

चौरसिया ज्वेलर्स

आकर्षक सोने चांदी के आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता

बेन्टेक्स एवं ग्रहरत्न उपलब्ध यहां

उचित ब्याज दर पर गिरवी रखी जाती है

मुक्तिधाम रोड, रामनगर, सुपेला, भिलाई

9827938211, 9827171332

खास खबर

राजिम कुंभ कल्प में सेल्फी पाइंट बना आकर्षण का केन्द्र

राजिम। राजिम कुंभ कल्प में कुलेश्वर महादेव मंदिर के पास संत समागम के सामने छत्तीसगढ़ की संस्कृति को सहेजती तथा पुनर्जीवित कर उसके संरक्षण के लिए संकल्पित सेल्फी जोन आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जिसमें बच्चे से लेकर बुजुर्ग वर्ग के लोग भरपूर मनोरंजन करते नजर आ रहे है। साथ ही मेले में बिताए अपने हर पर को यादगार बनाने के लिए वहां के हर एक सामग्री के साथ सेल्फी लेकर उसे अपने कैमरे में कैद कर रहें है। सेल्फी जोन ग्रामीण जीवन शैली पर आधारित बनाया है जहां बैलगाड़ी की तरफ सबसे ज्यादा भीड़ है। लोग किसान का वेश पहनकर सेल्फी ले रहे हैं। आज हम देख रहें है कि पाश्चात्य सभ्यता तेजी से हम सभी पर हावी हो रही है छत्तीसगढ़ की पारंपरिक वेशभूषा और सादगी भरी जिंदगी लुप्त होती जा रही है। इस सेल्फी जोन में सभी पुराने गहने और वेशभूषा संग्रहित है। वहां जाने से एक अलग प्रकार की शांति का अनुभव हो रहा है। गिनिज बुक आफ वर्ड रिकार्ड एवं तीन बार सीएम अवार्ड से सम्मानित रानी निषाद ने बताया कि आधुनिक पीढ़ी को अपनी संस्कृति की पहचान कराने के लिए यह सेल्फी जोन बनाया गया है। स्टाल में पर्रा, टोकरी, पारंपरिक गहने बिछिया, करधन, सुता ऐठी, सुर्रा, किला साडी, खुमरी, राउत वेशभूषा आदि छत्तीसगढ़ी आभूषण लोगो के बीच कौतुहल का विषय बना हुआ है।

राजिम कुंभ कल्प पहुंच रहे देशभर के साधु-संत

राजिम। राजिम में आयोजित कुंभ कल्प में संत समागम के दौरान राम चरित मानस की चौपाई ''संत समागम तीरथ राजू'' की प्रासंगिकता को उपस्थित जनसमूह ने साक्षात्कार किया। जब त्रिवेणी संगम के तट पर बने विशाल मंच पर देशभर के संतों का आगमन हुआ। यूं भी संत और तीरथ एक दूसरे के पर्याय हैं। संत के बिना किसी तीरथ का और तीरथ के बिना किसी संत का महत्व नहीं रह जाता। राजिम अपने आप में एक तीर्थ के सामान स्थापित है। जिसकी धरा से निकलने वाली श्रद्धा और आस्था के लिए यहां आने वाले हर श्रद्धालुओं को साकारात्मक गतिज और ऊर्जा से भर देती है। साथ ही त्रिवेणी संगम की स्वर लहरियों के साथ जब भगवान श्री राजीव लोचन की आरती में बजने वाली घंटे-घड़ियाल की आवाज के साथ ताल में ताल मिलकर मग्न होकर नाचती है, उस अलौकिक भावना के भाव का साक्षातकार बहुत ही कम लोगों को ही मिल पाता है, जिसकी जितनी श्रद्धा भाव होते हैं, उसे उसी भाव से उस अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। संगम तट पर बने मंच पर कुंभ कल्प में आयोजित संत समागम में भाग लेने आए देशभर के साधु-संत महात्माओं के स्वस्ति वाचन से पूरा कुंभ धर्म और आस्था की त्रिवेणी में डूबकी लगाने से नहीं रोक सके। संतों ने राजिम कुंभ में पहुंचकर भगवान श्रीराजीव लोचन एवं राजिम के पवित्र भूमि के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आभार माना कि उन्हें छत्तीसगढ़ की इस पवित्र भूमि में भगवान श्री राजीव लोचन के दर्शन लाभ का सौभाग्य मिला। साथ ही राजिम की भूमि अपने संत पुत्रों को अपने सानिध्य में पाकर स्वयं को आनंदित होने से नहीं रोक पाई। उस क्षण में वेद मंत्रों से निकलने वाली आनंदित तरंगों का अहसास उपस्थित संपूर्ण जन समुदाय ने महसूस किया। तभी जन समुदाय ने उद्घोष करते हुए अपने आनंद के साक्षात्कार का जय-जयकार किया। इस क्षण के साक्षी उपस्थित विशाल जनसमूह है।

रामकाज किन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम, श्रीरामलला दर्शन योजना के पहले जत्थे को मुख्यमंत्री साय ने किया रवाना

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। ''रामकाज किन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम'', मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार मानस की इन पंक्तियों के अनुरूप श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप काम कर रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के निरंतर आदर्शों से सीख लेते हुए राज्य के नागरिक तथा तंत्र एक आदर्श समाज का निर्माण कर सकें, इसके लिए श्रीरामलला दर्शन योजना आरंभ की गई। मुख्यमंत्री साय ने श्री रामलला दर्शन योजना के तहत आज राजधानी रायपुर के रेल्वे स्टेशन से अयोध्या जाने वाली विशेष ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

ट्रेन में 850 राम भक्तों की टोली जय श्रीराम का नारा लगाते हुए अयोध्या के लिए रवाना हुआ। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, कृषि मंत्री रामविचार नेताम, खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री साय श्री रामलला दर्शन के लिए जाने वाली विशेष ट्रेन को आज सुबह 10.30 बजे रायपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नम्बर 07 से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस विशेष ट्रेन में रायपुर संभाग के सभी 05 जिलों के 850 श्रद्धालुओं को अयोध्या धाम का दर्शन करायेगा।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि यह क्षण हमारे लिए गौरवशाली है कि छत्तीसगढ़ की जनता श्री रामलला के दर्शन के लिए जा रही है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने हमारी सरकार बनने पर श्री रामलला दर्शन योजना का वादा किया था, उसे पूरा करते हुए आज छत्तीसगढ़ से अयोध्या पहली ट्रेन रवाना हुई है। आने वाले दिनों में रायपुर के साथ रायपुर के अलावा बिलासपुर और रायगढ़ से भी ट्रेन अयोध्या के लिए चलेगी। श्री रामलला दर्शन योजना के तहत यह विशेष ट्रेन छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं को सप्ताह में एक बार अयोध्या धाम का दर्शन कराएगी। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में अयोध्या के साथ-साथ अन्य धार्मिक स्थलों की भी यात्रा करायी जायेगी। छतीसगढ़ देश का पहला राज्य है, जहां की जनता को सरकारी खर्च पर श्री रामलला का दर्शन कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि मार्च महीने में पूरे मंत्रिमंडल के साथ रामलला के दर्शन करने अयोध्या जाएंगे। रायपुर रेलवे स्टेशन पर जैसे ही मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अयोध्या धाम की ओर जाने वाली विशेष ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। स्टेशन का पूरा वातावरण जय श्रीराम के जयकार से गूंज उठा। यह गूंज ट्रेन के जाने के बाद काफी समय तक उठती रही। गौरतलब है कि 12 कोच वाली इस ट्रेन में एक बार में छत्तीसगढ़ के करीब 850 श्रद्धालु श्री रामलला के दर्शन करने अयोध्या जा सकेंगे। इस विशेष ट्रेन का संचालन 5 मार्च से प्रारंभ हो रहा है। श्री रामलला दर्शन योजना के तहत श्रद्धालुओं को पूरा पैकेज मिलेगा जिसमें छत्तीसगढ़ से अयोध्या जाने, वहां रहने की व्यवस्था, मंदिर दर्शन, नाश्ते और खाने की भी व्यवस्था रहेगी। इस ट्रेन में टूर एस्कॉर्ट, सुरक्षा कर्मी और चिकित्सकों का दल भी मौजूद रहेगा।

इस अवसर पर विधायक सर्वश्री राजेश मूणत, पुरन्दर मिश्रा, अनुज शर्मा, मोतीराम साहू सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। संस्कृति एवं धर्मस्व सचिव पी. अंबलगन, पर्यटन मण्डल के प्रबंध संचालक जितेन्द्र शुक्ला साथ ही आयुक्त जनसंपर्क मयंक श्रीवास्तव, कलेक्टर गौरव सिंह, एस.पी. संतोष सिंह, नगर निगम आयुक्त अबिनाश मिश्रा सहित पर्यटन विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

हमारी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में पशुधन आज भी महत्वः मंत्री टंक राम वर्मा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा ने कहा है कि छत्तीसगढ़ की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन का महत्व है। पशुधन का उपयोग कृषि कार्यों के साथ-साथ अन्य आर्थिक गतिविधियों में भी है। इस महत्ता के कारण हमारी संस्कृति में पशुधन को पूजनीय माना गया है। वर्मा रायपुर जिले के ग्राम घुलघुल में जिला स्तरीय पशुप्रदर्शनी और पशु मेला में पशु मालिकों को सम्बोधित कर रहे थे।

पशु चिकित्सा विभाग के द्वारा आयोजित इस मेले में उन्नत नस्ल के पशु प्रदर्शित किए गए थे। साथ ही यहां स्वस्थ्य पशु प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 230 कृषक और पशुपालकों ने हिस्सा लिया। मेले में बीमार पशुओं का उपचार कर दवाईयां वितरित की गई। प्रतियोगिता में दुधारू गाय वर्ग में संजय शर्मा नेवरा, आकाश अग्रवाल नेवरा, तथा शत्रुहन यादव रजिया के गाय को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इसी प्रकार फेरहा यदु, हितेन्द्र मिर्झा एवं गंगा यदु के भैंस को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान (दुधारू भैंस वर्ग) तथा बकरा-बकरी वर्ग में राकेश साहू कुम्हारी, परस निषाद खपरीकला एवं देवेश वर्मा के बकरा-बकरी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान, बैल जोड़ी वर्ग में ईश्वर साहू, रूपेन्द्र यादव, रामजी साहू के बैल को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान एवं उन्नत वत्स पालन में यशकुमार यदु मोहगांव, हेमंत यदु खपरीकला, अशोक यदु आलेसुर को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान तथा कुक्कुट वर्ग में बिसरू निषाद, महाराज टण्डन एवं बिसरू निषाद को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जिला पंचायत सभापति राजू शर्मा, तिल्दा जनपद अध्यक्ष श्रीमती सुमन देवव्रत नायक, जनपद सदस्य श्रीमती स्वाति वर्मा, सभापति जनपद पंचायत तिल्दा शिवशंकर वर्मा, ग्राम कोहका के सरपंच सहदेव कुर्रे, भगवती साहू, विजय ठाकुर, तेजराम वर्मा, पशुधन विकास विभाग के संयुक्त संचालक डॉ. शंकरलाल उइके तथा विभाग के जिला स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित थे।

विधानसभा बैकुंठपुर की तर्ज पर लोकसभा चुनाव में देंगे ऐतिहासिक बढ़त - कृष्ण बिहारी जायसवाल

श्रीकंचनपथ न्यूज

कोरिया। 4 मार्च को कोरबा लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत कोरिया भाजपा कार्यालय में भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरोज पांडेय का आगमन हुआ सरोज पांडेय को भाजपा की ओर से कोरबा लोकसभा का प्रत्याशी बनाया गया है। जिस संबंध में कोरिया भाजपा कार्यकर्ताओ से परिचय सम्मेलन के रूप में सरोज पांडेय का चुनाव पूर्व यह पहला दौरा कार्यक्रम रहा।

भाजपा से कोरबा लोकसभा प्रत्याशी सरोज पांडेय के साथ स्वास्थ मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल,धर्मलाल कौशिक, बैकुंठपुर विधायक भईया लाल राजवाड़े,पूर्व विधायक चंपा देवी पावले मुख्य रूप से उपस्थित रहे ।कार्यक्रम की शुरुआत में मंच का संचालन व भाजपाईयों द्वारा स्वागत कार्यक्रम जिला महामंत्री पंकज गुप्ता के द्वारा कराया गया जिसके मद्देनजर कोरिया जिले के भाजपा कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने जोरदार तरीके से पहले तो आतिशबाजी की और फिर फूल माला और पुष्प

गुच्छ भेंट कर प्रत्याशी सरोज पांडेय का स्वागत अभिवादन किया। आपको बता दें की सरोज पांडेय के स्वागत कार्यक्रम और परिचय सम्मेलन में भाजपा महिला मोर्चा और भाजपा कार्यकर्ताओं सहित तमाम ज्येष्ठ श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं की एकजुटता और बड़ी संख्या में उपस्थिति की तारीफ में उपस्थित सभी बड़े नेताओं ने जमकर तारीफ किया । कार्यक्रम के पहले उद्बोधन में जिला अध्यक्ष कृष्ण बिहारी जायसवाल ने कोरबा लोकसभा की भाजपा प्रत्याशी सरोज पांडेय को कोरबा लोकसभा प्रत्याशी बनाए जाने पर उनको बधाई देते हुए बताया की अविभाजित कोरिया सहित कोरिया में बतौर जिला अध्यक्ष के कार्यकाल और भाजपा कार्यकर्ताओं की एकजुटता के साथ मेहनत से कोरिया भाजपा की संगठनात्मक मजबूती में काफी इजाफा हुआ है । और विपक्ष में रहते हुए अलग अलग स्तर के विभिन्न चुनावों में भाजपाईयों का कब्जा बरकरार रहा है । कार्यक्रम के दूसरे उद्बोधन में बैकुंठपुर विधायक भईया लाल राजवाड़े ने सर्व प्रथम सरोज पांडेय के कोरिया आगमन पर धन्यवाद करते हुए स्वास्थ मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल,सरोज पांडेय, कोरबा लोकसभा प्रभारी धर्मलाल कौशिक का आभार जताया तत्पश्चात विधायक भईया लाल राजवाड़े ने जिला अध्यक्ष कृष्ण बिहारी जायसवाल के बयान को दोहराते हुए कहा की 25 हजार से विधानसभा जीते हैं और 51हजार से लोकसभा जीतेंगे । तो मैं भी आप सभी भाजपा के सिपाहियों से निवेदन करूंगा की मोदी जी जिन्होंने राम को लाया है हमे उनको लाना है और सरोज दीदी को जिताना है और कोरिया, एम सी बी जिले को विकास में अग्रणी बनाना है।

राजिम कुं कल्प में लगा निशुल्क रक्त जांच शिविर

राजिम। राजिम कुंभ कल्प में पहुंचने वाले साधु-संतों एवं लोगों के लिए स्वास्थ्य कैंप लगाकार निशुल्क रक्त जांच किया जा रहा है। भगवान श्री कुलेश्वरनाथ महादेव मंदिर के समीप लगे इस शिविर में प्रतिदिन सैकड़ों लोगों का स्वास्थ्य की जांच भी किया जा रहा है। राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त समाजसेवी डॉ प्रियंका बिस्सा ब्यास एवं नेहरू युवा केन्द्र सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मगरलोड एवं छत्तीसगढ़ नर्सिंग कॉलेज रायपुर के सहयोग से शिक्षा एवं जागरूकता अभियान के तहत इस शिविर का शुभारंभ 3 मार्च को किया गया, जो 8 मार्च महाशिवरात्रि तक जारी रहेगा। आयोजिका डॉ बिस्सा ने बताया कि रक्तवीर मुहिम हमारी चिकित्सा टीम द्वारा चलाई जा रही है। मेले में पहुंचे सभी साधु-संतो, महंतो और महामण्डलेश्वरो के साथ ही मेला घूमने आए अन्य श्रद्धालुओ के लिए यह स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें ब्लड ग्रुप, सिकल सेल रोग, हीमोग्लोबिन, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, एचआईवी की जांच की जा रही है।

राज्य ओपन स्कूल साधारण सभा की बैठक के महत्वपूर्ण निर्णय

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने राज्य ओपन स्कूल साधारण सभा की बैठक ली। इसमें कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि बहुत से बच्चे किसी रोजगार में लगे होने से समय के अभाव के कारण ओपन स्कूल में दाखिला लेते हैं ऐसे में उनको पढ़ाई में कोई परेशानी न हो इसके पूरा ध्यान रखा जाएगा।

राज्य ओपन स्कूल द्वारा आयोजित परीक्षा के परिणाम पर शिक्षा मंत्री ने चिंता जताते हुए प्रत्येक शनिवार और रविवार को ऑनलाइन क्लास आयोजित करने के निर्देश दिए। इन क्लास में 'स्वयंप्रभा' के जरिए पढ़ाई कराई जाएगी। इसके साथ ही राज्य ओपन स्कूल की परीक्षा अब साल में तीन बार आयोजित की जाएगी।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि अब माध्यमिक शिक्षा मंडल साल में दो बार परीक्षाओं का आयोजन कराएगा ऐसे में राज्य ओपन स्कूल को अपने विद्यार्थियों को एक मौका और देना चाहिए। बैठक में कुछ केंद्रों को बंद करने का सुझाव दिया गया। जिस पर शिक्षा मंत्री ने 50 विद्यार्थियों से कम केंद्रों को बंद करने और सभी केंद्रों की निगरानी के निर्देश दिए।

मोदी की गारंटी को पूरा करते हुए साकार करेंगे विकसित छत्तीसगढ़ का सपना- मुख्यमंत्री

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि मोदी की गारंटी को पूरा करते हुए विकसित छत्तीसगढ़ का सपना साकार करेंगे। मुख्यमंत्री यहां राजधानी रायपुर के अटल बिहारी बाजपेयी ऑडिटोरियम मेडिकल कॉलेज में चेट्रीचंड्र महोत्सव समिति, रायपुर और संपूर्ण सिंधी समाज, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री साय ने चेट्रीचंड्र महोत्सव पर शासकीय अवकाश की घोषणा की ।

अभिनंदन समारोह में प्रदेश भर से आए सिंधी समाज के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि भारत-पाकिस्तान के विभाजन का सबसे ज्यादा दंश सिंधी समाज ने ही झेला है। देश को आगे बढाने में सिंधी समाज का बहुमूल्य योगदान है। चाहे व्यापार का क्षेत्र हो या राष्ट्र भक्ति की बात हो। सिंधी समाज हमेशा अग्रणी रहा है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की सोच है कि भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना है। भारत फिर से सोने की चिड़िया बने। एक विकसित भारत का निर्माण हो। दस वर्षों के मोदी जी के प्रयास से हमारा देश आर्थिक सेक्टर में 11वें स्थान से पांचवे स्थान आ गया है। आने वाले 5 साल में देश को आर्थिक क्षेत्र में तीसरे स्थान पर लाना है। इसके लिए सभी का सहयोग जरूरी है। विकसित भारत के लिए विकसित छत्तीसगढ़ बनाना जरूरी है। विकसित छत्तीसगढ़ के लिए आप सभी के व्यापार को भी विकसित व्यापार बनाना जरूरी है। सभी के सहयोग से विकसित छत्तीसगढ़ बनेगा, इसमें सिंधी समाज की बड़ी भूमिका होगी।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री साय ने कहा कि हमारी सरकार बने अभी ढाई महीने हुए हैं। मोदी की गारंटी को पूरा करने की दिशा में सरकार कदम बढ़ा चुकी है। 18 लाख प्रधानमंत्री आवास का निर्णय पहली कैबिनेट में लिया गया। बहुत जल्द गरीबों का पक्का मकान बनना शुरू हो जाएगा। 2 साल का बकाया बोनस 12 लाख से ज्यादा किसानों को 3716 करोड़ रुपये 25 दिसंबर को हम दे चुके हैं। 21 क्विंटल प्रति एकड़ के हिसाब से धान की खरीदी की गई है। इस साल बंपर धान की खरीदी हुई है। एक लाख 47 हज़ार मेट्रिक टन धान की खरीदी हुई है । 24 लाख 72 हजार किसानों ने धान बेचा है। महतारी वंदन योजना के तहत 70 लाख 14 हजार बहनों का फॉर्म वैध पाया गया है। जल्द ही एक हज़ार रुपये की पहली किश्त उनके खाते में हस्तांतरित कर दी जाएगी। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ के विकास के लिए जो भी आवश्यक कदम होंगे वो हम उठाएंगे।

इस अवसर पर विधायक पुरन्दर मिश्रा, पूर्व विधायक श्रीचंद सुंदरानी, राजू जगदीश, अमर परवानी, अमित चिमनानी सहित प्रदेश भर से आए सिंधी समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

Jaquar Roca Parryware AJAY FLOWLINE
Shri Vijay Enterprises
Sanitarywares, Tiles, CPVC Pipes & Bathroom Fittings etc.
Supela Market, Bhilai
PH. 0788-4030909, 2295573

CAR DECOR
House Of Exclusive Seat Cover, Car Stereos Matting & Sun Control Film & Other Accessories
Shop No.3 Nafish Tower. Opp. Indian Coffee House, Akashganga, Bhilai
Mo.9300771925, 0788-4030919
K. Satyanarayan

ॐ SAIRAM
Mobile Accessories
मोबाईल शॉप में कार्य करने हेतु लड़को की आवश्यकता है
7000415602
Shop No. 78, Himalaya Complex, Supela, Bhilai

ROCKEY INDUSTRIES
FURNITURE PALACE
Deals in: (Steel & Wooden) Luxury & Imported Furniture
Akash Ganga, Supela, Bhilai Ph. 2296430

दास गार्मेन्ट्स
जींस, शर्ट, टी-शर्ट, फ्राक सूट, फ्राक, फैंसी सलवार सूट एवं किट्स वियर,अंडर गारमेन्ट्स, गाउन के लेटेस्ट कलेक्शन
एक बार अवश्य पधारें
गणेश मार्केट, गुरुद्वारा, रोड सुपेला, भिलाई, 7828248067

Ashok JEWELLERY
Gifts ● Toys ● Cosmetics
Perfumes ● Sia Jewellery
Beside Parakh Jewellers, Akash Ganga, Supela, Bhilai
Hello: 0788-4052727
Mukesh Jain 9009959111
Rishabh Jain 8103831329

खास खबर

साइकिल सवार मजदूर को ट्रेलर ने रौंदा

रायगढ़। रायगढ़ घरघोड़ा सड़क पर चलना लोगों के लिए मौत के कुएं पर जान हथेली पर लेकर चलने की तर्ज हो गया है, आलम यह है की मंगल को मंगलकारी घटना समझ में पूंजी पत्र थाना क्षेत्र से सामने आई है। जिसमें कोयल ट्रेलर इस घटना के बाद क्षेत्र वासियों ने चक्का जाम कर दिए हैं।

जानकारी अनुसार पूंजीपथरा थाना क्षेत्र अंतर्गत समरुमा पूंजीपथरा थाना के बीच घाट के पास एक ट्रेलर ने साइकिल सवार मजदूर ग्रामीण की ठोकर मारकर रौंद दिया है। बताया जा रहा है कि घटनाकारी वाहन कोयला से भरी ट्रेलर क्रमांक सीजी 10 बी 5134 के चालक ने लापरवाही पूर्वक वाहन चलाते हुए ओव्हर टेक करने के चलते सड़क के किनारे चल रहे ग्रामीण को अपनी चपेट में ले लिया। निर्दोषों सायकिल सवार की मौके पर ही मौत हो गई। वही हादसे में मृतक का नाम नाम पंचू यादव निवासी सामारुमा उम्र 60 वर्ष बताया जा रहा है, जो सायकिल से कामकाज खत्म कर अपने घर की तरफ जा रहा था उसी समय घटना का होना बताया जा रहा है। ह्रदयविदारक दुर्घटना को देखकर स्थानीय लोगो ने चक्का जाम कर दिया है। वही पूंजीपथरा थाना प्रभारी तथा घरघोड़ा से पुलिस पेट्रोलिंग की टीम मौके पर पहुंच गई है।

बरमकेला पुलिस के हत्थे चढ़े शराब कोचिये को भेजा गया जेल

रायगढ़। सारंगढ बिलाईगढ़ जिले में जिले मे जुआ, सट्टा, अवैध शराब, गांजा बिक्री करने वाले के विरुद्ध लगातार कार्यवाही करने हेतु निर्देश करते आ रहे है की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं उप पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन मे थाना प्रभारी सउनि विजय गोपाल के निर्देशन मुखबीर सूचना पर प्र.आर. किशोर कुमार खटकर आर. कन्हैया चौहान दिनेश चौहान मिनकेतन पटेल के द्वारा घटना स्थल ग्राम बडे कपरतुंगा जंगल मे आरोपित ब्रम्हा साहू पिता वेणुधर साहू उम्र 40 वर्ष निवासी बडे कपरतुंगा थाना बरमकेला जिला सारंगढ बिलाईगढ के कब्जे से एक सफेद रंग प्लास्टिक बोरी के अंदर प्लास्टिक पन्नी मे भरी 20 लीटर अवैध कच्ची महुआ शराब कीमती 4000/ रुपए को पकड़कर जप्ती कार्यवाही कर ब्रम्हा साहू के विरूद्ध धारा 34(2),59(क) आबकारी एक्ट तहत विधिवत कार्यवाही कर गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है।

बाइक शो-रूम में घुसे चोर सीसी कैमरे में कैद हो गए

राजनांदगांव। शहर के फोरलेन किनारे शक्ति नगर में स्थित दुपहिया वाहनों के दो शो रूम में 3 मार्च की देर रात दो चोरों ने शटर को तोड़कर चोरी का असफल प्रयास किया। वे अंदर भी घुसे लेकिन आलमारी का ताला तोड़ने के बाद उन्हें कुछ हासिल नहीं हुआ तो वे भाग निकले। पहले रात में उन्होंने कक्कड़ ऑटो में दबिश दी। यहां वे भीतर तक प्रवेश कर चुके थे। उन्होंने अंदर के दराज भी खोले और आलमारी भी देखी। इन्हें यहां कुछ मिला नहीं तो वे कुछ ही दूरी पर स्थित मनराज होंडा शो रूम में पहुंच गए। बाहर की बाउंड्री फांदकर वे शटर तक पहुंच गए। लेकिन यहां मौजूद गार्ड ने हलचल सुनी तो आवाज लगाई। आवाज सुनकर वे फरार हो गए। इस संबंध में पुलिस ने पूछताछ की है। हालांकि फुटेज में चोरों का चेहरा पहचान नहीं आ रहा है।

खेत से पंप और घर से वॉशिंग मशीन चोरों ने पार किया

अंबिकापुर। अलग-अलग घटना में दो जगह चोरी हो गई। पहली घटना में खेत से चोर सबमर्सिबल पंप लेकर भाग गए। पुलिस ने बताया कि लुंड्रा थाना क्षेत्र के झेरा डीह निवासी आनंद सिंह ने खेत में बोर कराकर सिंचाई के लिए सबमर्सिबल पंप लगाया था। चोर रात में पंप चोरी कर भाग गए। इसी प्रकार मिलिंद दबले के घर के अंदर घुसकर चोर वॉशिंग मशीन लेकर भाग गए।

सरगुजा में अगवा कर छात्रा से गैंगरेप: रात को चचेरे भाई के साथ दुकान से लौट रही थी नाबालिग, 4 आरोपी गिरफ्तार

सरगुजा (ए)। सरगुजा में नाबालिग को अगवा कर गैंगरेप का मामला सामने आया है। पीड़िता अपने चचेरे भाई के साथ दुकान से सामान लेकर लौट रही थी, तभी वहां पहुंचे चार युवकों ने भाई की पिटाई कर उसे भगा दिया। फिर नाबालिग को दूर ले जाकर उसके साथ दो युवकों ने दुष्कर्म किया। घटना सोमवार रात लगभग 8.30 बजे की है।

भाई ने गांव वालों को इस घटना की सूचना दी। जिसके बाद ग्रामीणों के सहयोग से पुलिस ने चारों युवकों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों को मंगलवार को कोर्ट से जेल भेज दिया गया। मामला दरिमा थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, रामेश्वर तिग्गा (20), फ्रांसिस तिग्गा (21), बीरेंद्र लकड़ा (19) और राजेश लकड़ा (23) सोमवार रात दरिमा थाना क्षेत्र के एक गांव में शादी में शामिल होने आए थे। रात को चारों युवक नशे की हालत में दो अलग-अलग मोटरसाइकिलों से बाहर निकले। इसके बाद रास्ते से गुजर रही नाबालिग छात्रा को जबरन बाइक पर बैठाकर जंगल की ओर ले गए।

दो युवकों ने किया रेप, छोड़ने आ रहा युवक पकड़ाया

नाबालिग छात्रा को जंगल में ले जाकर दो युवकों ने उसके साथ गैंगरेप किया। दो युवक इस दौरान पहरेदारी कर रहे थे। ग्रामीण इकट्ठे होकर बाइक सवारों की तलाश के लिए जंगल की ओर जा रहे थे। तभी नाबालिग को वापस गांव की ओर लेकर आ रहे एक बाइक सवार को ग्रामीणों ने पकड़ लिया। पीड़ित छात्रा हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करती है। वह कुछ दिनों पहले ही घर आई थी।

सूचना पर पहुंची पुलिस, सभी आरोपी गिरफ्तार

SDOP अखिलेश कौशिक ने बताया कि घटना की सूचना पर रात को ही दरिमा थाना पुलिस गांव पहुंच गई। ग्रामीणों ने पकड़े गए आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया। मंगलवार को पुलिस ने बाकी आरोपियों को भी दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया। मंगलवार शाम को सभी आरोपियों को कोर्ट मे पेश किया गया।

घटना की रिपोर्ट पर दरिमा पुलिस ने चारों आरोपियों के खिलाफ धारा 363, 366, 376 (2)(एन), 376 (2)(जी) और पॉक्सो एक्ट की धाराओं के तहत अपराध दर्ज किया है।

लकड़बग्घे का आतंक: 24 घंटे में चार लोगों पर किया हमला, गांव में दहशत

कोंडागांव (ए)। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले के माकड़ी ब्लाक में इन दिनों लकड़बग्घा के आतंक से लोग परेशान है। लकड़बग्घा आए दिन लोगों पर हमला कर रहा है, जिससे लोग डरे हुए हैं। इसके बाद भी वन विभाग की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। वहीं लकड़बग्घा ने बुधवार को एक बार फिर ग्रामीणों पर हमला कर दिया। लकड़बग्घे के हमले में चार ग्रामीण घायल हो गए। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती किया गया, जहां इनका इलाज किया जा रहा है। हालांकि सभी लोग खतरे से बाहर हैं। जानकारी के अनुसार माकड़ी ब्लाक के ग्राम तितरवंड की लीलाबाई मंडावी और पति हीरामन मंडावी दोनों रात में बरामदे में सोए हुए थे। देर रात करीब 1 बजे बजे लकड़बग्घे ने लीलाबाई पर हमला कर दिया। पत्नी को बचाते हुए हीरामन लकड़बग्घा के सामने आ गया। लकड़बग्घे ने हीरामन को भी घायल कर दिया।

दूसरी ओर ग्राम उलेरा के 35 वर्षीय राम प्रसाद मरकाम अपने घर में शाम 4 बजे गाय के चारा के लिए घास काट रहे थे। तभी अचानक लकड़बग्घा ने उनपर पर हमला कर दिया जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। वहीं ग्राम पंचायत बागबेड़ा खुड़ी के लखन्तिन मंडावी पर लकड़बग्घे ने उस वक्त हमला कर घायल कर दिया जब वह घर के सामने टहल रही थी। एक ही दिन में लकड़बग्घे ने चार ग्रामीणों पर हमला कर घायल कर दिया। इससे ग्रामीणों में डर का माहौल है। इधर, वन विभाग इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है।

माकड़ी डिप्टी रेंजर जय सिंह मरकाम ने बताया, इसका प्रकरण बनेगा तथा लकड़बग्घे के हमले में घायलों को क्षतिपूर्ति राशि दी जाएगी। क्षतिपूर्ति राशि घायलों के अकाउंट में डायरेक्ट जमा होगी।

माकड़ी के स्वास्थ्य विभाग के डॉ सतीश नायक ने बताया, मरीजो को सिर और हाथों में लकड़बग्घा के काटने के निशान है। मरीज को प्राथमिक उपचार दिया गया।

कर्जदारों की प्रताड़ना से परेशान युवक ने की आत्महत्या

बिलासपुर (ए)। सकरी क्षेत्र के ग्राम सैदा में रहने वाले युवक की लाश गांव के तालाब में मिली है। उसके पास से एक सुसाइड नोट मिला है। इसमें तीन लोगों पर रुपये के लेनदेन को लेकर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया गया है। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पीएम कराया है। स्वजन से पूछताछ कर घटना की जांच की जा रही है। सकरी थाना प्रभारी राजेश मिश्रा ने बताया कि ग्राम सैदा में रहने वाले जितेंद्र दुबे(28) किसान थे। इसके साथ ही वे जमीन की खरीदी बिक्री का काम करते थे। सुबह उनकी लाश गांव के ककरैया तालाब में मिली। इसकी सूचना पर पुलिस की टीम गांव पहुंच गई। पुलिस ने गांव के लोगों की मदद से शव पानी से बाहर निकाला।

पास में ही युवक की बाइक खड़ी थी। बाइक के उपर ही युवक का शर्ट पैंट लपेटकर रखा हुआ था। पैंट की जेब से सुसाइड नोट पुलिस को मिला है। इसे पुलिस ने जब्त कर लिया है। टीआई ने बताया कि सुसाइड नोट में तीन लोगों से लेनदेन की बात लिखी है। इसके कारण युवक को परेशान करने की बात भी है। इसके आधार पर पूरे मामले की जांच की जा रही है। गांव के लोगों और स्वजन से भी पूछताछ की गई है। युवक का शव मिलने की सूचना पर पुलिस की टीम गांव पहुंच गई। पूछताछ में स्वजन ने बताया कि जितेंद्र मंगलवार की सुबह 11 बजे घर से निकला था। इसके बाद वह घर नहीं लौटा।

स्वजन उसके पहचान वालों से जानकारी जुटा रहे थे। तालाब के पास से शराब की बोतल भी मिली है। इससे आशंका व्यक्त की जा रही है कि युवक ने शराब में जहरीले पदार्थ का सेवन किया होगा। नशा अधिक होने के बाद वह तालाब में कूद गया होगा। फिलहाल इसकी पुष्टि नहीं हुई है। पीएम रिपोर्ट से युवक के मौत का कारण स्पष्ट होगा। चार पेज का सुसाइड नोट, तीन लोगों से चल रही पूछताछ ग्राम सैदा में युवक का शव मिलने की सूचना पर पहुंची पुलिस ने चार पेज का सुसाइड नोट जब्त किया है। इसमें एक महिला समेत तीन लोगों का नाम है। पुलिस ने महिला और दो लोगों को दोपहर को ही हिरासत में ले लिया था। उनसे पूछताछ की जा रही है। इसके अलावा युवक के स्वजन और जान-पहचान वालों से भी पूछताछ की जा रही है।

शराब पीकर व ओवर स्पीड चलाने वाले 106 का लाइसेंस निलंबित

कोरबा (ए)। शराब पीकर वाहन चलाने, ओवर स्पीड, बिना सीट बेल्ट एवं धारा 304 ए के तहत 106 लोगों के विरूद्ध पुलिस ने लाइसेंस निलंबन की कार्रवाई की है। इसके तहत पहले तीन माह तक लाइसेंस निलंबित रहेगा, उसके बाद दोबारा नियमों का उल्लंघन करने पर लाइसेंस निरस्त करने की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश पर विशेष अभियान चलाकर थाना- चौकी के मुख्य मार्ग, चौक चौराहों में पेट्रोलिंग की जा रही है। इसी कड़ी में थाना-चौकी एवं यातायात द्वारा ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की गई।

जांच के दौरान 68 लोग शराब पीकर वाहन चलाते हुए मिले। इसी तरह सात लोग को ओवर स्पीड वाहन चलाने, 28 लोगों के विरूद्ध बिना सीट बेल्ट के वाहन चलाने तथा धारा 304 के तहत तीन लोगों का लाइसेंस निरस्त किया गया। इसके साथ ही अलग-अलग जगह पर ओवर स्पीड वाहन चलाने वालों पर कार्रवाई करते हुए 22 प्रकरणों में लगभग 35 हजार रुपये वसूले। कोरबा पुलिस के अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा पेट्रोलिंग किया गया। पैट्रोलिंग के दौरान मुख्य चौक चौराहा एवं भीडभाड़ वाले इलाकों में जाकर पैट्रोलिंग किया गया। गलत तरीके से वाहन चलाने वाले एवं ओवर स्पीड वहां चलने वाले पर पुलिस द्वारा कार्रवाई की गई। पुलिस द्वारा लगातार हो रहे एक्सीडेंट में कमी लाने के लिए विशेष अभियान को चलाते हुए वाहनों की जांच की गई। साथ ही चालकों को समझाइश दी गई कि ओवर स्पीड वाहन ना चलाएं और ना ही शराब पीकर वाहन न चलाए। साथ ही अपने करीबियों को नशे की हालत में वाहन न चलाने दे।

चुनाव से पहले राजनांदगांव पुलिस ने कसी कमर

आईजी बोले- इंटरस्टेट बॉर्डर पर रहे कड़ी निगरानी, निष्पक्ष चुनाव कराना लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक

राजनांदगांव (ए)। राजनांदगांव रेंज के पुलिस अधिकारियों का एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान आईजी दीपक झा ने कहा कि निष्पक्ष चुनाव कराना लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। लोग बिना किसी भय, प्रलोभन के मतदान कर सके इसके लिए उचित वातावरण बनाए रखें।

आईजी दीपक झा ने कहा कि अंतरराज्यीय और अंतरजिला सीमा सीलिंग को मजबूत करने के निर्देश दिए गए, ताकि चुनाव में प्रलोभन देने के लिए नशीली चीजें, अवैध हथियारों और विभिन्न सामग्रियों की तस्करी पर अंकुश लगाया जा सके। आईजी दीपक झा ने कहा कि पुलिस अधिकारियों को मतदान के पहले, मतदान के दिन और मतदान के बाद की कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई। साथ ही उन्होंने कहा कि सबी अधिकारी-कर्मचारियों को अपने उत्तरदायित्व की जानकारी हो।

कैलाश शर्मा ने कर्मचारियों को दी ट्रेनिंग

पुलिस महानिरीक्षक दीपक झा के निर्देशन पर पुलिस अधीक्षक राजनांदगांव मोहित गर्ग के मार्गदर्शन में जिला निर्वाचन कार्यालय से आए मास्टर ट्रेनर कैलाश शर्मा ने कर्मचारियों को ट्रेनिंग दी। साथ ही नक्सल गतिविधियों पर नजर बनाए रखने और सूचना का आदान प्रदान करने के लिए कहा गया।

कार्यशाला में ये लोग रहे मौजूद

कार्यशाला में राजनांदगांव से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा, एसडीओपी डोंगरगढ़ आशीष कुंजाम, डीएसपी तनुप्रिया ठाकुर, चुनाव सेल प्रभारी और शहर थाना प्रभारी उपस्थित थे। इनके अलावा राजनांदगांव रेंज के साथ तीनों जिला कबीरधाम, खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई, मोहला-मानपुर-अंचौकी से आये डीएसपी, एसडीओपी और थाना प्रभारी मौजूद रहे।

शहर में प्रवेश करने वाले 24 वाहनों पर लगाया 7100 का पेनाल्टी

कटघोरा (ए)। काफी समय से चल रही अंधेरगर्दी पर लगाम कसने के लिए पुलिस अब एक्शन मोड पर है। रात में पुलिस ने अभियान चलाने के साथ 24 वाहनों पर 7100 रुपये की पेनाल्टी लगाई। इन वाहन चालकों द्वारा बाइपास का उपयोग करने के बजाय शहर के भीतर से निकल रहे थे। थाना प्रभारी धर्म नारायण तिवारी ने विभिन्न स्त्रोतों से जानकारी एकत्र की, तो पता चला कि रात में भारी वाहनों की आवाजाही शहर के भीतर से होती है और इस वजह से न केवल नियम टूटते हैं बल्कि हादसों का खतरा भी बना होता है। स्टाफ के साथ टीआई ने चकचकवा क्षेत्र व नगर के मुख्य चौराहे पर वीर नारायण चौक में कई घंटे कैंप किया। इस दौरान नियम विरूद्ध इस रास्ते से आवाजाही करने वाले भारी वाहनों को रोक कर पेनाल्टी की गई। साथ ही कहा गया कि जिस प्रकार के नियम हैं उसके अंतर्गत कार्रवाई का दौर जारी रहेगा। निरीक्षक ने एक सप्ताह तक इस प्रकार का काम करने की बात कही। साथ ही कहा कि जब तक वाहन चालकों के रवैये में सुधार नहीं होता है, तो पुलिस सख्ती करेगी। थाना प्रभारी ने अवैध शराब से लेकर अन्य मामलों को लेकर भी एक्शन लेने पर जोर दिया। इसके लिए संबंधित बीट प्रभारियों को निर्देशित किया गया है।

सेक्टर-6 एंव रिसाली के प्रतिष्ठित संस्थान विज्ञापन के लिए संपर्क करें
9303289950, 9827806026 8962815243

Shop-47, 'A' Market, Sec-6, Bhilai Nagar, Distt., Durg (C.G.)

कार्यालय कार्यपालन अभियंता तांदुला जल संसाधन संभाग दुर्ग (छ.ग.)
आदेश क्रमांक 1114/व.ले.लि./2023-24 दुर्ग, दिनांक 01/03/2024
सिस्टम निविदा क्र. 150016/निविदा सूचना क्र. 46/वलेलि/2023-24, दुर्ग दिनांक 19.12.2023 के माध्यम से दुर्ग जिले के विकासखंड दुर्ग की बिरेझर डायवर्सन शीर्ष कार्य का जीर्णोद्धार कार्य एवं आर.डी. 0 मी. से 3450 मी. तक माईनर एवं सब माईनर आर.डी. 0 मी. से 1050 मी. तक नहर लाईनिंग कार्य साथ ही 03 नग व्ही.आर.बी., 15 नग आउटलेट, 04 नग इनलेट निर्माण कार्य की आमंत्रित निविदा एकल निविदा होने के फलस्वरूप प्रतिस्पर्धा के अभाव में निरस्त की जाती है।
जी नम्बर-06541
सुरेश कुमार पाण्डेय
कार्यपालन अभियंता
तांदुला जल संसाधन संभाग
दुर्ग (छ.ग.)
जी-08311/6

कार्यालय क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी जिला दुर्ग
पांच बिल्डिंग के सामने, मालवीय चौक जिला दुर्ग
क्रमांक क्षेपअ/अपलेखन/(1)/रद्दी कतरन/2023-24/1148 दिनांक 29/2/24
//निविदा-सूचना//
इस कार्यालय के अंतर्गत एकत्रित रद्दी पेपर कतरन विक्रय हेतु पृथक-पृथक मोहरबंद निविदायें आमंत्रित की जाती है।
निविदा प्रपत्र अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत कर रुपये 100- नगद भुगतान कर कार्यालयीन दिवस में दिनांक 01.03.2024 से दिनांक 07.03.2024 तक समय सायं 3.00 बजे के पूर्व तक प्राप्त किये जा सकते हैं।
1. निविदा बिक्री आरंभ करने की तिथि - 01.03.2024 समय 12.00 बजे से।
2. निविदा बिक्री करने की अंतिम तिथि - 07.03.2024 मसय 02.00 बजे तक।
3. निविदा जमा करने की अंतिम तिथि - 07.03.2024 समय 3.00 बजे तक।
4. निविदा खोलने की तिथि - 07.03.2024 समय 4 बजे।
क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी
जिला दुर्ग
जी-08283/2

दुल्हन बैंगल्स & फैंसी

RAKESH SINGH
Mob.-9840760388
7987759030
Specialist : Wedding mix match bangles, Glass bangle, Plastic bangle. Saree pin, Bindi, Rubber Band. Bracelet, Butter Fly, Ear ring and many more
पुष्पांजलि स्वीट्स के बाजू में, कृष्णा टाकिज रोड, रिसाली, भिलाई

भारतीय बैग हाउस

फैंसी स्ट्राली, स्कूल बैग, ऑफिस बैग, सफर बैग, लेपटॉप बैग, फैंसी छतरी, रेनकोट इत्यादि के विक्रेता
VIP happy journey
AMERICAN TOURISTER
कृष्णा टाकीज रोड, बैंक ऑफ बडौदा के बाजू में
रिसाली भिलाई, संजय गुप्ता : 93003-77572

भिलाई मसाला उद्योग

शुद्ध कुटे हुए मसाले,पापड़, अचार, बड़ी, जड़ी-बूटी, जचकी का सामान इत्यादि
128, ए- मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई, फोन. 2284508, मो. 9826137766

राकेश ट्रेडर्स
विगत 6 वर्षों से यह दुकान पानी टंकी के सामने स्थानांतरित हो गई है।
Dealers
Marbles, Grinight, Black Stone, Nano & Double Charge Verified Tiles Digital Wall & Floor Tiles Cement Coloru etc.
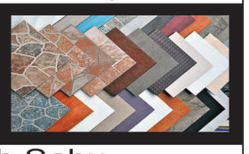
रायपुर रेट पर माल उपलब्ध
Rakesh Sahu
9302443750, 9907127357
Krishna Talkies Road, Beside Hariom Furniture, Risali, Bhilai - 490006

खास - खबर

संयंत्र की बास्केटबॉल टीम में भाग लेने के लिए चयन स्पर्धा का आयोजन

भिलाई। टाटा इस्पात संयंत्र द्वारा दिनांक 15 से 17 मार्च, 2024 तक एस.पी.एस.बी. अंतर इस्पात संयंत्र बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में भिलाई इस्पात संयंत्र की टीम भी भाग ले रही है। भिलाई इस्पात संयंत्र की टीम के गठन हेतु पंत स्टेडियम, सेक्टर 01, भिलाई के बास्केटबॉल कोर्ट पर 06 मार्च 2024 को शाम 06 बजे से चयन स्पर्धा का आयोजन किया जा रहा है। अत: भिलाई इस्पात संयंत्र के इच्छुक कार्मिक (पुरुष) खिलाड़ी व उनके बच्चे तथा भिलाई नगरीय परिक्षेत्र के युवा बेरोजगार खिलाड़ी 06 मार्च 2024 को संध्या 06:00 बजे से पंत स्टेडियम सेक्टर 01 के बास्केटबॉल कोर्ट में निम्न चयनकर्ताओं परविंदर सिंग, आर एस गौर तथा सरजीत चकवर्ती के पास अपना नाम दर्ज करा सकते हैं। इस चयन स्पर्धा के प्रभारी उप प्रबंधक डेनिस क्रिस्टी होंगे।

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ निर्वाचन में होने वाले व्यय के दर निर्धारण पर हुई चर्चा

दुर्ग। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक अपर कलेक्टर बजरंग कुमार दुबे की अध्यक्षता में 29 फरवरी को जिला कार्यालय के सभाकक्ष में चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों/राजनीतिक दलों द्वारा विभिन्न मदों पर किए जाने वाले व्ययों के मानक दर निर्धारण किए जाने के संबंध में संबंधित विभागों के अधिकारियों व राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक आयोजित की गई। बैठक में निर्वाचन के दौरान प्रयुक्त होने वाले विभिन्न आयटमों के दर के संबंध में चर्चा की गई और विधानसभा निर्वाचन 2023 के दौरान विभिन्न मदों पर किये जाने वाले व्ययों के मानक दर निर्धारण की सूची उपलब्ध करायी गई, जिसमें सर्व सम्मति से राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों द्वारा निर्धारित मानक दर पर अपनी सहमति व्यक्त की तथा उपस्थिति एवं कार्यवाही विवरण में अपना हस्ताक्षर किया। बैठक में आम आदमी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। प्राप्त जानकारी अनुसार भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित प्रोफार्मा में दैनिक व्यय का रख-रखाव को सुविधाजनक बनाने के लिए लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 77(1) के अनुसार जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा अभ्यर्थियों द्वारा प्रचार-प्रसार के लिए उपयोग में लाए जाने वाले आवश्यक व्यय की दरों का निर्धारण का आदेश पृथक से जारी किया जाएगा, जिसकी संसूचना पृथक से राजनीतिक दलों को उपलब्ध करायी जाएगी।

सचिव और कलेक्टर ने की श्रम अन्न सहायता केन्द्रों का निरीक्षण

दुर्ग। छत्तीसगढ़ शासन के सचिव सह श्रमायुक्त अलरमेल मंगई डी., कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी और सचिव भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मण्डल श्रीमती सविता मिश्रा ने आज श्रम विभाग के द्वारा संचालित योजना शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न सहायता अंतर्गत दुर्ग जिला में संचालित विभिन्न श्रम अन्न सहायता केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण किया। उन्होंने बी.आर.पी चौक मरोदा, तहसील चौंक दुर्ग, सब्जी मार्केट सुपेला, कुगदा कुम्हारी में केन्द्रों की हालात देखी। निरीक्षण के दौरान जिले में संचालित समस्त श्रम अन्न सहायता केन्द्रों में शिविर लगाकर पात्र श्रमिकों का श्रमिक पंजीयन करने हेतु निर्देशित किया है। साथ ही केन्द्रों में विभागीय जिला अधिकारी व कर्मचारियों को मूल-भूत सुविधाये सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये। इस अवसर पर सहायक श्रमायुक्त दुर्ग श्रद्धा केशरवानी भी उपस्थित रही।

शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न सहायता केन्द्र में श्रमिक पंजीयन शिविर लगाने कलेक्टर ने दिये निर्देश

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। जिले में शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न योजना के तहत श्रमिक वर्गों के लिए किफायती दर पर दोपहर का भोजन कार्यक्रम के तहत संचालित शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न सहायता केन्द्रों में मूलभूत सुविधाएं बढ़ायी जाएगी। कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी ने अधिकारियों की बैठक में समीक्षा के दौरान नगरीय निकायों के आयुक्त और अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को संबंधित क्षेत्रों में संचालित अन्न सहायता केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने श्रम विभाग के अधिकारी को उक्त केन्द्रों में श्रमिक पंजीयन शिविर लगाने और योजना के दिशा-निर्देशों के तहत अधिक से अधिक श्रमिकों को लाभान्वित करने निर्देशित किया।

श्रम विभाग के अधिकारी ने बताया कि जिले में दुर्ग के तहसील चौक में नगर निगम बिल्डिंग, मरौदा छावनी में पानी टंकी के पास, आकाश गंगा सब्जी मंडी सुपेला, अमलेश्वर में निषाद भवन के पास, कुम्हारी में रेलवे क्रॉसिंग कुगदा के पास सुबह 7 बजे से 11 बजे तक तथा वीएस इण्डस्ट्रीज हथखोज में दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक श्रम अन्न सहायता केन्द्र संचालित किया जा रहा है। यहां पर पंजीकृत श्रमिकों को पांच रूपए में भोजन उपलब्ध करायी जा रही है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 7 मई को जिला मुख्यालय दुर्ग के साथ-साथ विकासखण्ड मुख्यालय और नगरीय निकाय क्षेत्रों में महिला सम्मेलन का आयोजन महतारी वंदन योजना के रूप में किया जाएगा। कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी ने उक्त आयोजन के संबंध में जानकारी ली। महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि महतारी वंदन योजना के तहत 4 लाख 5 हजार 319 आवेदन प्राप्त हुए है, जिसे ऑनलाईन सत्यापन किये जा चुके हैं। 7 मई को जिला मुख्यालय में शीतला मंदिर परिसर कसारीडीह दुर्ग में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसी प्रकार मंगल भवन अहिवारा, दशहरा मैदान रिसाली, अम्बेडकर मंगल भवन भिलाई, रेस्ट हाउस के पीछे पाटन, मंगल भवन वार्ड क्रमांक 16 जामुल में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कलेक्टर सुश्री चौधरी ने नगरीय निकायों के अधिकारियों और जनपद सीईओ को उक्त आयोजन हेतु समुचित प्रबंध करने के निर्देश दिए है।

जिले में सामाजिक सुरक्षा पेंशन की समीक्षा करते हुए कलेक्टर सुश्री चौधरी ने कहा कि हितग्राहियों का आधार सीडिंग और केवाईसी पश्चात् डीबीटी के माध्यम से पेंशन राशि का भुगतान किया जाए। मृतक हितग्राहियों का नाम योजना से हटायी जाए। ऐसे हितग्राही जो अशक्त है, उनको बैंक सखी के माध्यम से राशि भुगतान हेतु घर पहुंच सेवाएं उपलब्ध करायी जाए।

कलेक्टर ने पीएमश्री योजना के तहत निर्माण कार्यों में प्रगति लाने, समितियों से धान का उठाव शीघ्र पूरा कराने, नॉन में जमा होने वाले चांवल की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया। बैठक में एडीएम अरविंद एक्का, नगर निगम भिलाई के आयुक्त देवेश ध्रुव, जिला पंचायत के सीईओ अश्वनी देवांगन, नगर निगम दुर्ग के आयुक्त लोकेश चन्द्राकर, नगर निगम रिसाली के आयुक्त आशीष देवांगन, नगर निगम भिलाई-3 चरोदा के आयुक्त दशरथ राजपूत, अपर कलेक्टर श्रीमती योगिता देवांगन, सभी एसडीएम, सभी जनपद सीईओ सहित समस्त विभाग के जिला प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे।

लोक सेवा केन्द्रों का निरीक्षण करेंगे तहसीलदार

कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी ने जिले में स्थापित लोक सेवा केन्द्रों में प्राप्त आवेदनों की जानकारी ली। उन्होंने सभी तहसीलदार को संबंधित क्षेत्र के लोक सेवों केन्द्रों का सप्ताह में दो बार जांच करने की निर्देश दिए। साथ ही लोक सेवा केन्द्रों के माध्यम से प्राप्त आवेदनों का समय पर निराकरण सुनिश्चित करने कहा।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर लगाने कलेक्टर ने दिये निर्देश

कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी ने वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धजनों और प्रयास आवासीय विद्यालय के बालिकाओं की स्वास्थ्यगत समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को प्रत्येक सप्ताह में एक बार वृद्धाश्रम और प्रयास आवासीय विद्यालय में स्वास्थ्य शिविर लगाने के निर्देश दिए हैं। साथ ही वृद्धजनों और आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की साप्ताहिक स्वास्थ्य परीक्षण कर समुचित उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा है।

आयुष्मान कार्ड वितरण में लाये तेजी

कलेक्टर सुश्री चौधरी ने जिले में आयुष्मान कार्ड वितरण की जानकारी ली। वितरण में विलंब होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए उन्होंने नगरीय निकाय और जनपद से समन्वय स्थापित कर आयुष्मान कार्ड वितरण में प्रगति लाने के निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान स्वास्थ्य विभाग अंतर्गत हाई रिस्क केश, एनीमिया, पल्स पोलियों ड्रॉप, सिकलसेल व लेप्रोसी आदि प्रकरणों की भी जानकारी ली। साथ ही समय पर उपचार मुहैय्या कराने के निर्देश दिए।

भिलाई इस्पात संयंत्र में 53वें राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस का आयोजन

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग द्वारा 53वें राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस का आयोजन 04 मार्च 2024 को महात्मा गांधी कला मंदिर में ईएसजी उत्कृष्टता के लिए नेतृत्व पर ध्यान विषय पर हर्षोल्लास के साथ किया गया। समारोह का उद्घाटन उप निदेशक आशुतोष पांडे ने कार्यपालक निदेषक अंजनी कुमार, कार्यपालक निदेषक एस मुखोपाध्याय, कार्यपालक निदेषक बी के गिरी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ रवींद्रनाथ एम, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी तापस दासगुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी पी के सरकार, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी असित साहा, मुख्य महाप्रबंधक प्रवीण राय भल्ला तथा मुख्य महाप्रबंधक प्रभारीगण, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण, ओए और यूनियन प्रतिनिधियों की उपस्थिति

में दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर संयंत्र के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों सहित संयंत्रकर्मी तथा बड़ी संख्या में पुरस्कार विजेता उपस्थित थे।

विभिन्न सुरक्षा गतिविधियों के लिए सम्मानित और विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत विजेताओं को बधाई देते हुए, उप निदेशक आशुतोष पाण्डेय ने संयंत्र बिरादरी को कार्यस्थल और जीवन के सभी क्षेत्रों में सुरक्षा मानकों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री पाण्डेय ने कहा कि सभी विभागों और कर्मचारियों के बीच अच्छा समन्वय और सहयोग दुर्घटना मुक्त उत्पादन प्राप्त करने की कुंजी है।

कार्यपालक निदेषक (वर्क्स) अंजनी कुमार ने अपने संबोधन में सुरक्षा के महत्व पर प्रकाष डाला और विभागों को अपने विभागीय सुरक्षा जागरूकता सप्ताह और सुरक्षा माह 2024 के तहत विभिन्न सुरक्षा जागरूकता गतिविधियों और प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए उनकी सराहना की। उन्होंने कहा इस 53वें राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस पर, मैं सभी से अपील करता हूं कि संयंत्र और अपने घरों में हमेशा सुरक्षित और व्यवस्थित काम करने की भावना बनाए रखने और अपने सहकर्मियों, दोस्तों और परिवार के सदस्यों को अपने जीवन और कार्य में सुरक्षा उपायों का पालन करने के लिए प्रेरित करते रहें।

प्रारंभ में प्रवीण राय भल्ला ने अतिथियों का स्वागत किया और सुरक्षा गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की और पूरे भिलाई बिरादरी से 'जीरो हार्म' के लक्ष्य को प्राप्त करने का आग्रह किया। इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा विद्युत सुरक्षा मानक पुस्तिका के हिंदी संस्करण तथा सुरक्षा मानकों पर आधारित एक काव्य संग्रह का विमोचन किया गया।

ग्राम करगाडीह में चिकित्सा शिविर का आयोजन

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के तत्वाधान में निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व विभाग द्वारा नि:षुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन अपने आस-पास के परिधीय क्षेत्रों में एवं खदान क्षेत्रों में किया जाता है। 05 मार्च 2024 को आदर्ष इस्पात ग्राम करगाडीह में चिकित्सा षिविर का आयोजन किया गया। करगाडीह में आयोजित चिकित्सा शिविर में कुल 118 लोगों की जांच करके उनको दवाई वितरण किया गया। प्रात: 10 बजे से प्रारंभ हुए षिविर में सामान्य जांच, शुगर, बीपी जांच के अतिरिक्त नि:षुल्क दवाएं भी प्रदान की गई। इस षिविर में सीएसआर मेडिकल टीम से चिकित्सक डॉ माला चैधरी, फार्मासिस्ट शषि भूषण राय, शुगर एवम बीपी परीक्षण के लिए श्रीमती फ्रिोजा जोसेफ व पंजीयनकर्ता शम्भू दयाल तथा विभाग की ओर से बुधेलाल उपस्थित थे। भिलाई इस्पात संयंत्र अपने आस-पास के परिधीय क्षेत्रों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य की नि:षुल्क सुविधा काफी लंबे समय से उपलब्ध कराता आ रहा है। इसका उद्देष्य दूरस्थ ग्रामीण एवं वनांचल क्षेत्र में रहने वाले लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। निरन्तर स्वास्थ्य षिविरों का आयोजन, संयंत्र के परिधीय क्षेत्रों तथा खनि नगरियों में किया जा रहा है।

परियोजना विभाग द्वारा सुरक्षा प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। भिलाई इस्पात संयंत्र के परियोजना विभाग में सतत सुरक्षा संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार के उददेश्य से विगत 26 फरवरी से 02 मार्च 2024 तक सुरक्षा प्रोत्साहन सप्ताह 2024 का आयोजन किया गया।

इस दौरान कार्मिकों एवं ठेका श्रमिकों के लिए सुरक्षा पोस्टर, सुरक्षा क्विज, सुरक्षा कविता, सुरक्षा स्लोगन, सुरक्षा रंगोली, सुरक्षा निबंध आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस सुरक्षा प्रोत्साहन सप्ताह का समापन 02 मार्च 2024 को परियोजना विस्तार भवन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कार्यपालक निदेशक सुब्रत मुखोपाध्याय द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक उन्मेष भारद्वाज और मुख्य महाप्रबंधक मानस कुमार गुप्ता तथा महाप्रबंधक जे तुलसीदासन सहित बड़ी संख्या में विभाग के अधिकारी तथा कार्मिकगण एवं ठेका श्रमिक भी उपस्थित थे। परियोजना विभाग में विभिन्न सुरक्षा गतिविधियों को लागू कर श्रमिक प्रभावी योग्य बनाने के लिए मुख्य अतिथि सुब्रत मुखोपाध्याय ने सभी जोन की प्रशंसा की और सभी कार्मिकों एवं ठेका श्रमिकों को सुरक्षा प्रथम की महत्ता को अपने साथियों में प्रचारित कर अपनाने का आग्रह किया। मुख्य महाप्रबंधक राजीव कुमार श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में सुरक्षा प्रोत्साहन सप्ताह आयोजन के उद्देश्य को उल्लेखित किया।

संपत्तिकर नहीं पटाने पर निगम ने 14 दुकानों को किया सील

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। भिलाई निगम के राजस्व अमले ने कान्ट्रेक्टर कालोनी सुपेला में मंजीत सिंह बग्गा के 6 दुकानो तथा स्मृति नगर मे श्यामा चरण पाण्डेय के 8 दुकान को संपत्तिकर की राशि नही पटाये जाने के कारण सील बंद किया।

निगम आयुक्त देवेश कुमार ध्रुव के निर्देश पर संपत्तिकर विभाग द्वारा बकाया राशि की वसूली के लिए भवन स्वामी को विधिवत नोटिस के बाद कुर्की वारंट जारी कर जोन को निर्देशित किये है कि बकायादारो द्वारा निगम के देय करो का भुगतान नहीं किये जाने पर कुर्की की कार्यवाही कर बकाया राशि की वसूली की जाये। इसी क्रम में कान्ट्रेक्टर कालोनी सुपेला में निवासरत मंजीत सिंह बग्गा के 6 दुकान जिसका संपत्तिकर बकाया राशि 6 लाख 82 हजार 3 सौ 32 रूपया तथा स्मृति नगर निवासी श्यामाचरण पाण्डेय के द्वारा संपत्तिकर की बकाया राशि 3 लाख 25 हजार 7 सौ 45 रूपया जमा नहीं करने के कारण उनके 8 दुकानों को जोन 1 सहायक राजस्व अधिकारी की टीम ने 14 दुकान को सील बंद किया है।

अवकाश दिवस मे खुले रहेंगे टैक्स काऊंटर

वित्तीय वर्ष समाप्ति पर निगम द्वारा भवन स्वामियों को सुविधा प्रदान करने के लिए निगम मुख्य कार्यालय एवं जोन कार्यालय के संपत्तिकर काउन्टर अवकाश दिनो में खुले रखने के निर्देश आयुक्त ने वसूली एजेंसी को दिये है। नागरिक अवकाश अवधि में भी निर्धारित स्थान पर उपस्थित होकर निगम संबंधी देय करो का भुगतान कर सकते है।

आयुक्त ने वार्डो में सफाई का लिया जायजा, निर्माण कार्य को गुणवत्ता के साथ समय पर करने के निर्देश

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। नगर पालिक निगम आयुक्त लोकेश चन्द्राकर ने आज सुबह कार्यपालन अभियंता दिनेश नेताम,उपअभियंता हरिशंकर साहू, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली व स्वास्थ्य विभाग अमला के साथ गांधी चौक, कचहरी चौक,महावीर कॉलोनी, बैद्यनाथ पारा,कलेक्ट्रेट के पीछे बिजली ऑफिस के आस पास के अलावा पटेल चौक क्षेत्र सहित आदि स्थानों में सफाई व्यवस्था देखी।

इसके बाद आयुक्त लोकेश चन्द्राकर ने वार्ड 51 बोरसी मधुबन कालोनी में हो रहे नाला निर्माण कार्य का निरीक्षण कर अधिकारियों को नाला निर्माण कार्य समय एवं गुणवत्ता के साथ जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिये।निरीक्षण के दौरान उन्होंने अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि शहर के कई वार्डो में सड़क,नाली के किनारे बिल्डिंग मटेरियल रखने पर सामग्री जब्त करने के एवं सड़क क्षेत्र किनारे कबाड़ गाड़ियों को हटाने के लिए नोटिस जारी

करने के निर्देश दिये,रेत, गिट्टी रखने के कारण नालियां हो रही जाम आयुक्त ने बताया कि भवन निर्माण करने वाले नागरिकों ने बिल्डिंग मटेरियल रखने की व्यवस्था नहीं की है।

ऐसे में लापरवाही से सड़क या नाली के किनारे रेत-गिट्टी रखने से आवाजाही पर असर पड़ रहा है। इसके कारण नागरिकों को परेशानी हो रही है।ऐसे मालिको को नोटिस जारी किया जाएगा नही हटाने पर जब्त की कार्रवाई के साथ फाइन किया जाएगा।अव्यवस्था फैलाने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई।उल्लेखनीय है कि आयुक्त लोकेश चंद्राकर ने शहर मार्केट क्षेत्रों में दोपहर व शाम कचरा कलेक्शन करने के निर्देश अधिकारियों को दिए हैं, निरीक्षण के मौके पर मौजूद अधिकारियों ने बताया कि दोपहर व शाम में भी मार्केट क्षेत्रों से कचरा का उठाव किया जा रहा है।बाजार क्षेत्रों में सुबह से शाम एवं रात तक कचरा का फैलाव हो जाता है इसको देखते हुए रात्रि में इन कचरा को हटाने का काम स्वच्छता कर्मचारियों के द्वारा किया जाता है। वही दिन में भी सुबह-सुबह वार्डो सहित मार्केट क्षेत्रों की विशेष साफ सफाई की जाती है। आज आयुक्त लोकेश चन्द्राकर के निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, सफाई दरोगा सुरेश भारती, राजू सिंह, मनोहर शिंदे, रामलाल भट्ट, परम ए लक्ष्मी सहित सुपरबाजार व स्वास्थ्य विभाग अमला की मौजूदगी में किया गया।आयुक्त लोकेश चन्द्राकर ने अधिकारियों को शत-प्रतिशत डोर-टू-डोर गारबेज कलेक्शन और सोर्स सेग्रीगेशन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

उन्होंने कहा कि एकत्रित कचरे का निपटान वैज्ञानिक रीति से ही करने तथा खुले में कचरे का परिवहन एवं कचरा जलाने पर सख्त कार्यवाही करने के लिए कहा गया है।आयुक्त ने निरीक्षण के दौरान शहर के चौक-चौराहों, बाजारों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर विशेष सफाई की व्यवस्था के लिए भी निर्देशित किया गया है।उन्होंने एसएलआरएम सेंटर का हर महीने निरीक्षण कर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियमों के अनुसार सुनिश्चित करने के भी निर्देश अधिकारियों को दिए गए हैं।

अवैध कब्जाधारियों के विरुद्ध कार्यवाही है निरंतर जारी

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। भिलाई इस्पात संयंत्र के नगर सेवाएं विभाग के प्रवर्तन अनुभाग तथा ट्रैफिक पुलिस द्वारा संपदा न्यायालय के आदेष पर सड़क दुर्घटनाओं से बचाव हेतु सड़क किनारे अवैध रूप से लगे ठेले, खोमचेवालों के विरुद्ध आज 5 मार्च 2024 को संयुक्त रूप से कार्यवाही की गई। कार्यवाही के दौरान अवैध रूप से लगे ठेले को पंचनामा बनाकर जप्त भी किया गया।

विदित हो कि सड़कों पर यातायात के दबाव को देखते हुए दुर्घटना की स्थिति निर्मित करने वाले अवैध दुकानों, ठेलेवाले, खोमचे, फलवाले के विरुद्ध नागरिकों की षिकायत पर अभियान चलाया गया। इन अवैध कब्जाधारियों द्वारा सड़क पर बांस बल्ली से घेराव कर दुकान लगाया जाता था, जिसके कारण सड़क पर ट्रैफिक जाम की स्थिति बनती है। प्रवर्तन अनुभाग द्वारा ट्रैफिक पुलिस तथा पुलिस विभाग के सहयोग से कार्यवाही कर दुकानों का हटाया जा रहा है। अवैध कब्जाधारियों द्वारा दुकानों के पुन: निर्माण को रोकने के लिए खाली कराये गए स्थानों पर जेसीबी के सहायता से गड्ढे कराया गया है।

कार्यवाही के दौरान ट्रैफिक टीआई श्री के वी नागे, प्रवर्तन अनुभाग के अधिकारी व कर्मचारी, पुलिस बल सहित महिला एवं पुरुष प्राइवेट सिक्योरिटी गार्ड उपस्थित थे। यह कार्यवाही माननीय संपदा न्यायालय के आदेश पर किया गया। अवैध कब्जाधारियों, भू माफियाओं और दलालों के विरुद्ध प्रवर्तन विभाग द्वारा कार्यवाही आगे भी निरंतर जारी रहेगी।

अवैध कब्जे वाले आवासों की लिखित सूचना प्रत्येक सप्ताह संबंधित थानों तथा जिला प्रशासन को भी दिया जाता है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक राजेश अग्रवाल द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि. छत्तीसगढ़ भवन, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित कर, 204 आकाशगंगा सुपेला, भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक राजेश अग्रवाल shreekanchanpath2010@gmail.com, Mo - 9303289950